ब्याह शादी के बढ़ते हुए इख़राजात

मौलाना [illegible] अहमद बरेलवी

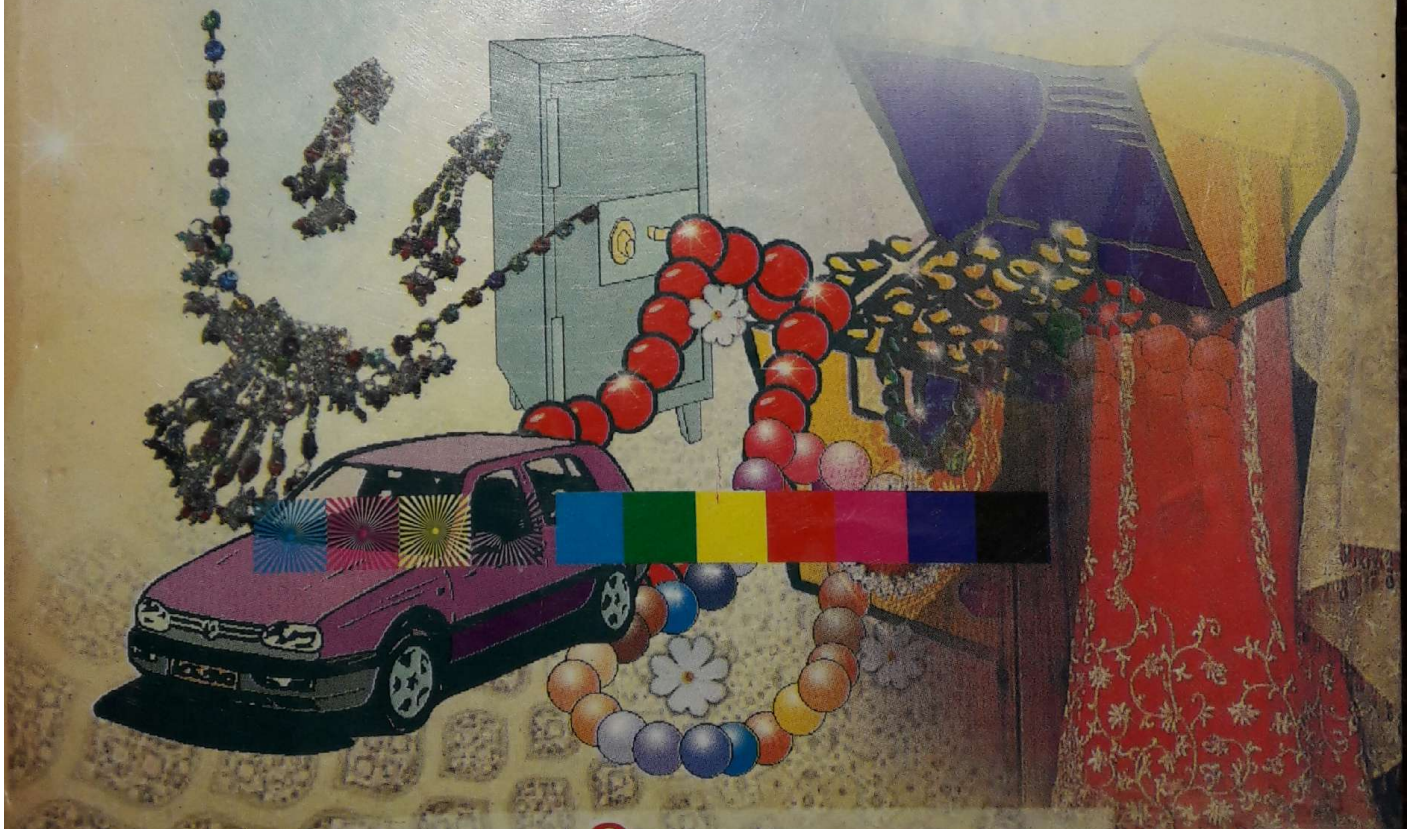

इस्लामी कुतुब ख़ाना
धैंरा ज़ि० बरेली

Scanned by CamScanner

अल्हम्दुलिल्लाह फ़क़ीर **सग ऐ रज़ा लाला ख़ान** अपने आइडियल हुज़ूर मोहसिन ऐ क़ोम ओ मिल्लत , काता ऐ बिदअत ओ दलालत , नासिर ऐ मसलक ऐ आला हज़रत , फ़ना फीर् रज़ा , मुहिब्बे ताजुशरिया , **हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती ततहिर अहमद रजवी मद्दाज़िल्लहु आली** की कुतुब ऐ मुबारका को पीडीएफ में करने की सआदत हासिल कर रहा हैं , आप जितने हज़रात इन कुतुब से इस्तेफ़ादा हासिल करे उनसे गुज़ारिश हैं के वो हुज़ूर मोहसिन ऐ क़ोम ओ मिल्लत की उम्र में अमल में हिम्मत में खैर ओ आफ़ियत के साथ बरकत की दुआ फरमाये और इस फ़क़ीर को भी खास तोर पर अपनी दुआओ में याद फरमाये अल्लाह करीम अपने हबीब अलैहि सलाम के सदके मुझे मसलक ऐ आला हज़रत पर कायम रख इसी पर खात्मा बिल ख़ैर नसीब फरमाये आमीन या रब अल आलामीन

8:48 PM

Scanned by CamScanner

بسم الله الرحمن الرحيم

ब्याह शादी के बढ़ते हुए इख़राजात

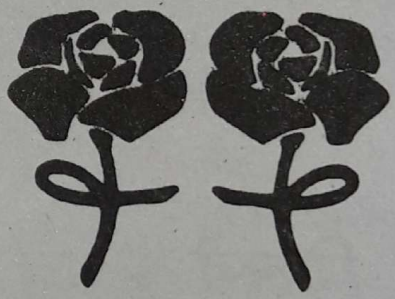

मुरत्तिब

मौलाना तत्हीर अह़मद बरेलवी

नाशिर

इस्लामी कुतुबख़ाना

रज़ा मार्केट, क़स्बा धौंरा, ज़िला बरेली शरीफ़

पिन : 243204 (उ.प्र.)

Scanned by CamScanner

ज़रूरी नोट : मुसन्निफ़ की इजाज़त के बग़ैर इस किताब को न छपवायें।

नाम किताब	:	ब्याह शादी के बढ़ते हुए इख़राजात
नाम मुरत्तिब	:	मौलाना तह्हीर अहमद रज़वी बरेलवी
नाशिर	:	इस्लामी कुतुबख़ाना, धौंरा टाण्डा, ज़िला बरेली शरीफ़, यू.पी.
कम्प्यूटर कम्पोज़िंग	:	मुहम्मद इमरान ख़ाँ M.Sc. (CS)
तसहीह	:	जनाब मुहम्मद अहमद उर्फ़ मुहम्मद महताब अली बरेलवी
सने तबाअत	:	1427 हिजरी मुताबिक़ 2006 ईसवी
तादाद	:	2000
क़ीमत	:	Rs.20=00

मिलने के पते

कुतुबख़ाना अमजदिया, 25, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली

आलाहज़रत दारुलकुतुब, 28, इस्लामिया मार्केट, बरेली शरीफ़

मकतबा रहमानिया रज़विया, दरगाहे आलाहज़रत, सौदागरान, बरेली शरीफ़

क़ादरी किताब घर, नौमहला मस्जिद, बरेली, यू.पी.

बरकाती बुक डिपो, अलजामिअतुल अहमदिया, हमाली पुरा, क़न्नौज

क़ादरी बुक डिपो, नौमहला मस्जिद, बरेली, यू.पी.

हारिस बुक डिपो, चौक बुध बाज़ार, टण्डन मार्केट, मुरादाबाद, यू.पी.

रहमानी कुतुबख़ाना, मिमयान टोला, नाला स्ट्रीट, बरेली

क़ौमी कुतुबख़ाना, बड़ा बाज़ार, बरेली

****

फ़ेहरिस्त

क़लम क्यूँ उठा? 5

ब्याह शादी और निकाह का मक़सद क्या है? 8

आ गया लड़कियों की नाक़दरी और बेइज़्ज़ती का ज़माना 10

एक दम सादा निकाह करना रसूलुल्लाह की सुन्नत है 12

धूमधाम से शादियाँ रचाना और बारातें चढ़ाना राजाओं बादशाहों, नवाबों और ज़मींदारों की देन है 13

घोड़े ने नाल ठुकवाई तो मेंढकी ने भी टांग उठाई 15

दुल्हन घर में और क़र्ज़ख़्वाह दरवाज़े पर 16

यारों दोस्तों का दिल रखने वाले बड़े बेवक़ूफ़ हैं 17

कुछ यार दोस्त शैतान भी होते हैं 17

एलबम का रिवाज 18

दूल्हा बन कर निकलने वाले जिस दिन जनाज़ा बन कर निकलेगा उस दिन को मत भूल 19

बाराती सिर्फ़ खाने चाटने के यार 21

किसी की मजबूरी से फ़ाइदा उठाना शरीफ़ इन्सान का काम नहीं 22

भाईयो घर लड़की वालों के भरने से नहीं भरता बल्कि अल्लाह भरता है 23

बूढ़े और बूढ़ियों के दिमाग़ ज़्यादा ख़राब हैं 24

नाजाइज़ तअल्लुक़ात के बाद भी निकाह हो सकता है 25

ख़ैरियत चाहो तो शरीफ़ों की बेटियों से शादी करो 27

लड़की देखने के बहाने ख़र्चे कराना 28

ब्याह शादी के ग़ैर ज़रूरी इख़राजात हिमाक़त व बेवक़ूफ़ी हैं और मसलिहत के ख़िलाफ़ हैं 28

इस्लाम हिकमतों वाला मज़हब है 30

एक फ़रमाने रसूल 31

निकाह अल्लाह की रहमत है 32

मज़हबे इस्लाम का जवाब नहीं 33

शादी के वक़्त के इख़राजात को बाप की जाएदाद से लड़की का हिस्सा समझना ग़ैर मुस्लिमों की देन है 35

Scanned by CamScanner

ज़रूरत हिम्मत की
लड़के और लड़कों वाले आगे बढ़ें 36
जो कुछ देना है अपनी बेटी को दो 37
मांग और डिमान्ड हराम है 37
यह शादी है या फिरौती 39
अपना घर छोड़ना आसान काम नहीं 40
लड़की देना एहसान है 40
इस दौर का मर्दे मुजाहिद 42
दीनदार समझदार लोग आपस में रिश्तेदारियाँ करें 42
घरों में औरतों की हुकूमत ख़तरनाक है 43
इख़राजात की ज़्यादती दीनदारी के लिए ज़हर है 45
ब्याह शदियों के इख़राजात पर कन्ट्रोल लड़कियों की शादी में मदद करने से नहीं होगा 45
लड़के भी तुम्हारे लड़कियाँ भी तुम्हारी फिर शदियों के लिए क्यूँ परेशान रहते हो 47
लड़की वालों से दो बातें 48
ज़्यादा देने वाले ज़्यादा परेशान 48
लड़के वालों की मांगें पूरी मत करो 49
देने और मुँह भरने से कमीने शरीफ़ नहीं हो सकते 49
क्या जहेज़ देना सुन्नत है 50
जो लड़कियों के रिश्ते के लिए परेशान हैं वही लड़कों के लिए मुँह फैलाए फिर रहे हैं 52
क्या तुम्हारी बेटियाँ पैग़म्बरों और वलियों की बेटियों से ज़्यादा अहमियत वाली हैं? 54
बढ़ते ख़र्चे और घटते धन्धे 56
हल सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम में 57
नेकी इन्सान के साथ बदले, सिले और जज़ा की उम्मीद अल्लाह से 58
मर्द के लिए एक से ज़्यादा निकाहों का रिवाज 59
एक अहम और ख़ास इस्लामी तजवीज़ 60
62

بسم الله الرحمن الرحيم

क़लम क्यूँ उठा?

हालात क़ाबू से बाहर हो चुके हैं आग लग चुकी है। माहौल जल रहा है। लड़के और लड़कियाँ जवानी की उम्र से ढल रहे हैं और वह घरों में बैठे हुए हैं ब्याह शादियों के फ़ालतू इख़राजात ग़ैर शरई रस्मो रिवाज एक दूसरे के साथ रह कर शरई ज़िन्दगी गुज़ारने की राह में रुकावट बने हुए हैं, वह निकाह करने से मजबूर हैं ज़िनाकारी, बदकारी, ग़ुन्डागर्दी बढ़ रही है। नफ़्स की ख़्वाहिश और शहवत को बुझाने, दिल को तसकीन देने के लिए ग़लत सलत, घिनौने और गन्दे तरीक़े ज़ोर पकड़ चुके हैं। बेहूदा नाविलों गन्दे क़िस्सों कहानियों और अफ़सानों को पढ़ कर नंगी गन्दी ब्लू फ़िल्मों को देख कर, बेहूदा गानों को सुनकर जवानी के दिन काटे जा रहे हैं। जिसकी वजह से तरह तरह की बीमारियों का दौर दौरा है। अख़बारात कह रहे हैं कि बे उसूल ग़ैर क़ानूनी मर्द व औरत के जिस्मानी तअ़ल्लुक़ात की वजह से एड्स जैसी मुहलिक और जानलेवा बीमारी का बादल अज़ाबे इलाही बन कर मुआ़शरे के ऊपर छाया हुआ है मगर आज की दुनिया में अँधेर नगरी में सब कुछ सही है कुछ भी ग़लत नहीं है। न गन्दे गाने न नंगी फ़िल्में और फ़ोटो और तसवीरें न ज़िनाकारी के अड्डे न बदकारी के ठेके न लड़कियों लड़कों की घर वालों से बग़ावत एक दूसरे को लेकर फ़रार होना घरों से भागना ख़ुद भी परेशान होना और घर वालों को भी परेशान करना बस अगर कोई काम ग़लत समझा जा रहा है तो वह सादगी के साथ निकाह करना अगर बुरा माना जा रहा है तो वह बग़ैर ख़र्चे किये हुए शरई दाइरे में रह कर एक जोड़े को आपस में मिला देना।

Scanned by CamScanner

रंगी को नारंगी कहते बने दूध से खोया
भारत की यह रीत देख कर सन्त कबीरा रोया

मैं देख रहा हूँ कि इधर सिर्फ़ बीस पच्चीस साल के अन्दर ही अन्दर बियाह शादी के इख़राजात ने जिनती तरक़्क़ी की है इतनी हज़ारों साल में नहीं हुई थी। रस्म व रिवाज बढ़ते ही जा रहे हैं। लाखों रुपयों के जहेज़ देने और हज़ारों को खिलाने पिलाने के बाद दूल्हा और उसके घर वालों के मुँह टेढ़े हैं पता नहीं यह आग कहाँ पहुँच कर बुझेगी।

अफ़सोस क़ाफ़िला लुट रहा है और हमें एहसास नहीं, चमन उजड़ रहा है और हम बेदार नहीं, खेत जल रहा है और हम होशियार नहीं, कोई माने न माने लेकिन हिम्मत नहीं हारना चाहिए। कोई समझे न समझे लेकिन समझाते रहना चाहिए। कोई जागे न जागे लेकिन बे वक़्त बे ज़रूरत सोने वालों को जगाते ज़रूर रहना चाहिए।

बस यह सब वुजूहात हैं इस किताब को लिखने के जिस का नाम है : "ब्याह शादी के बढ़ते हुए इख़रजात" पढ़िये और दूसरों को पढ़ कर सुनाइये। मस्जिदों में, मदरसों में, जलसों में, महफ़िलों में, उर्सों में, ख़ानक़ाहों में और बस चले तो गाड़ियों, मोटरों, बस्तियों और बाज़ारों में।

आख़िर कोशिश तो कीजिये, हिम्मत मत हारिये और ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो सब से बड़ी कोशिश ख़ुद अमल करना है और तौफ़ीक़ देना और हिम्मत पैदा करना अल्लाह ही का काम है। उसके लिए हम्द है वही तारीफ़ के लाइक़ है। सब कुछ उसी का है उसी से है और उसी तक है वही मअ़बूद व मक़सूद है वही मशहूद व मौजूद है वही मअ़नी व मतलूब है बस वही वह है बाक़ी सब ज़िल्ल, अक्स, परतो और साया हैं उस के नूर की तनवीरें हैं गोया कि वही

आइने के सामने है बाक़ी सब देखने ही देखने की तसवीरें हैं। और बेशुमार सलात व सलाम हों उसके उन महबूब व मरफ़ूअ़ पर जिन का नाम उसने आसमानों में "अहमद" और ज़मीनों में "मुहम्मद" रखा है। जिनकी ग़ुलामी ही इन्सानित है और जिनकी इताअ़त व पैरवी ही रब्बानियत है और ख़ुदा का वही है जो उनका है।

मैं सोचता था कि आज की दुनिया में यह कड़वी सच्चाई कौन बरदाश्त करेगा। हिम्मत काम नहीं कर रही थी कि नक़्क़ारख़ाने मे तूती की आवाज़ की क्या हैसियत होगी? लेकिन फिर हिम्मत करके लिखने बैठ गया इस उम्मीद पर कि शायद ख़ुदाए तआ़ला अपने करम से मानने और अमल करने वाले पैदा फ़रमा देगा आज नहीं तो कल इस नस्ल में न सही तो आने वालों में सच्चाई ज़रूर रंग लाएगी अपना काम किये जाओ और क़ौम को रास्ता दिखाते जाओ।

क़िया फ़िरदौसीए महरूम ने ईरान को ज़िन्दा
ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो मैं करूँ ईमान को ज़िन्दा

फ़क़त एक बन्दए गुनाहगार
अपने रब से मग़फ़िरत का तलबगार
और उसके नबी की रहमत व शफ़ाअ़त का उम्मीदवार
तनवीर अहमद रज़वी बरेलवी
साकिन क़स्बा धौंरा, ज़िला बरेली, यू.पी., इन्डिया
पिन-243204, मोबाइल - 9319295813, फ़ोन : 05813252466

ज़रूरी नोट : इस किताब को छपवा कर तक़सीम कराइये बहुत बड़े सवाब का काम है। छपवा कर बाँटने वाले हम से भी राब्ता कर सकते हैं हम उनकी भरपूर मदद करेंगे। तय्यार शुदा निगेटिव के ज़रिए निहायत सस्ते पैसों में हम उनका काम करा कर देंगे।

Scanned by CamScanner

ब्याह शादी और निकाह का मक़सद क्या है?

अल्लाह तआ़ला ने मर्द में औरत की तरफ़ और औरत में मर्द की तरफ़ रग़बत, दिलचस्पी और ख़्वाहिश पैदा की है और दोनों में एक दूसरे की ज़रूरत और चाहत रखी है दोनों की ज़िन्दगी एक दूसरे के बग़ैर नामुकम्मल और अधूरी रहती है। इस चाहत और रग़बत को नफ़्सानी ख़्वाहिश कहा जाता है। जिसको पूरा करना इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है यह ख़्वाहिश पूरी न हो तो इन्सान की ज़िन्दगी वीरान उजड़ी हुई और सूनी रहती है। लेकिन इस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए इन्सान को जानवरों की तरह बिल्कुल फ्री और आज़ाद नहीं छोड़ा गया कि जो मर्द जिस औरत से और जो औरत जिस मर्द से जब चाहे ख़्वाहिश पूरी कर ले बल्कि औरत को किसी मर्द का और मर्द को कुछ औरतों का पाबन्द किया गया। शरीअ़ते इस्लामिया ने इस जिन्सी ख़्वाहिश की तकमील के लिए जो दाइरा मुक़र्रर किया है उसको "निकाह" कहते हैं यानी कि निकाह का मक़सद शरई दाइरे में रह कर मर्द का औरत और औरत का मर्द से अपनी फ़ितरी और जिन्सी ख़्वाहिश को पूरा करना है ताकि उस ज़रिए से औलाद हासिल की जाए और नस्ले इन्सानी बाक़ी रह सके और वह बातें जो मर्द व औरत में एक दूसरे के लिए हराम थीं वह हलाल हो जायें और दोनों को एक दूसरे के साथ रहने सहने एक दूसरे की ख़िदमत और तीमारदारी वग़ैरा करने और जिस्मानी लज़्ज़त हासिल करने की इजाज़त मिल जाए। और यह मक़सद निकाह के दो बोल जिन्हें ईजाब व क़बूल कहते हैं दो गवाहों के सामने कहने से हासिल हो जाता है। एक कहे मैंने तुमसे निकाह किया और दूसरा कहे मैंने क़बूल किया और दो गवाह सुन लें बस यह काफ़ी है इसी को निकाह कहते हैं। ख़ुद सामने अगर न कहे तो

उसका वली व वारिस कह दे या किसी को अपनी तरफ़ से वकील व माज़ून बना दे। क़ाज़ी या हाकिम अपने सामने ईजाब व क़बूल कराकर लिखत करा दे तो बेहतर है। लेकिन यह शर्त और ज़रूरी नहीं।

बात सिर्फ़ इतनी थी लेकिन आज की दुनिया ने इसको कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। सालों से तय्यारियाँ होती हैं और एक दूसरे के ख़र्चे कराकर उन्हें बरबाद करने की मुहिम चलाई जाती है। अब तो हाल यह है कि लड़की पैदा हुई निकाह होगा पन्द्रह, बीस, पच्चीस साल बाद लेकिन अभी से फ़िक्र में घर वाले घुले जा रहे हैं। बैंकों में उसके नाम के खाते खोले जा रहे है, बीमे भी कराए जा रहे हैं। यह सब क्यूँ हुआ? कैसे हुआ? बात दरअस्ल यह हे कि इन्सान ने अपनी क़ब्र ख़ुद ही खोद डाली है। अल्लाह की दी हुई नेमतों, लज़्ज़तों को ख़ुद ही मुसीबत और अज़ाब बना डाला है सुख के बदले दुख राहत व आराम, चैन व सुकून के बदले बे चैनी और परेशानी मोल ले ली है। इस्लामी नुक़्तए नज़र से तो अगर किसी की पचास लड़कियाँ भी हों तब भी उसे निकाह व शादी के मामले में फ़िक्रमन्द नहीं होना चाहिए। और चैन की नींद सोना चाहिए क्यूँ कि इस्लाम मज़हब में लड़की और लड़की वालों पर निकाह में कोई भी ख़र्चा शरअ़न लाज़िम व ज़रूरी यानी वाजिब नहीं रखा गया है न किसी को खाना न नाश्ता न जोड़े और घोड़े हाँ अख़लाक़न कोई किसी को खिलाए पिलाए, हदिये तोहफ़े अपनी ख़ुशी से दे तो कोई हरज नहीं लेकिन यहाँ अख़लाक़ व ख़ुशी कहाँ अब तो माँग माँग कर खाया जाता है और छीन छीन कर ज़बरदस्ती लिया जाता है। बाज़ बाज़ दूल्हा और उसके घर वाले तो ऐसे हो गए हैं जैसे डकैतों का गिरोह। और बाज़ बारातें तो ऐसी हैं जैसे लुटेरों ने चढ़ाई कर दी हो। इस्लामी नुक़्तए नज़र से तो लड़की और उसके घर वालों पर निकाह के मामले में एक कौड़ी ख़र्च करना भी शरअ़न ज़रूरी नहीं बल्कि उसको और महर मिलना चाहिए।

Scanned by CamScanner

आ गया लड़कियों की नाक़दरी और बेइज़्ज़ती का ज़माना

आज हर तरफ़ औरतों को मर्दों के बराबर लाने और उनको हुक़ूक़ में बराबरी का दर्जा देने की तय्यारियाँ हो रही हैं आवाज़ें उठाई जा रही हैं, तहरीकें चलाई जा रही हैं, रिज़ल्यूशन पास किये जा रहे हैं लेकिन ब्याह शादी के बढ़ते ख़र्चों ने इन सब पर पानी फेर दिया है। बच्ची पैदा हो रही है तो बजाए ख़ुशी के ग़म मनाए जा रहे हैं। सब घर वालों के मुँह उतरे हुए हैं। किस क़द्र अफ़सोसनाक बात है कि एक इन्सान दुनिया में आया है और उसके आने पर ख़ुश होने के बजाए ग़म किया जा रहा है। यह सब ब्याह शादी के बढ़ते हुए ख़र्चों की वजह से हो रहा है। अगर इस्लामी अन्दाज़ के सादा निकाह हों तो ऐसा क्यूँ होता? और जिस औरत से दो चार बच्चियाँ हो जायें उसे मनहूस समझ कर घर से धक्के दे कर निकाल दिया जाता है। माँ के पेट में जाँच कराके लड़कियों को दवाईयों के ज़रिए क़त्ल करने के वाक़िआत रोज़ाना हज़ारों हो रहे है। हिन्दी रोज़नामा "दैनिक जागरण" 30 जनवरी 2006 सफ़हा 10 पर शाए एक रिपोर्ट के मुताबिक़ पेट में क़त्ल के नतीजे में अब हिन्दुस्तान में एक हज़ार मर्दों के मुक़ाबले में सिर्फ़ दौ सौ सात औरतें रह गई हैं। और अगर पैदा हो गई और बाप के पास कम क़िस्मती से लड़के वालों को भरने के लिए बहुत सी दौलत नहीं है या फिर लड़की सूरत व शक्ल की ज़्यादा अच्छी नहीं है तो उसको पूछने वाला कोई नहीं पैग़ाम ही नहीं आते। और जैसे तैसे आया भी तो रिश्ता मन्ज़ूर नहीं। बेचारी सब कुछ देख रही है, सुन रही है और अपनी नाक़द्री और बे इज़्ज़ती और घर वालों की फ़िक्र कुढ़न देख देख कर घुट रही है। अख़बारों में आप पढ़ते होंगे कि ऐसी कितनी लड़कियाँ तो ज़हर खा कर या फाँसी लगा कर मर जाती है। कुछ कोठे की रन्डियाँ बन रही हैं तो कुछ क्लब घरों और

होटलों की काल गर्ल बनने के लिए मजबूर हैं। यह उनकी ज़िन्दगी से खिलवाड़ नहीं तो और क्या है? क्या यही मतलब है औरत को मक़ाम देने का और उसको हक़ दिलाने वालों का।

और शादी हो गई तो सुसराल वालों के ताने, मांगें और डिमांडें और कहीं उसकी कोख से भी लगातार दो चार लड़कियाँ हो गईं तो सुसराल में नाक़द्री और बे इज़्ज़ती का फिर तो कोई ठिकाना ही नहीं।

ख़ुलासा यह कि आज के दौर में लड़की को माँ के पेट से लेकर सताने का जो दौर शुरू होता है वह बुढ़ापे तक ख़त्म होने में नहीं आता। मैं कहता हूँ यह होटलों और क्लबों में अय्याशियाँ, ज़िनाकारियाँ करने वाले रईस व अमीर ज़ादे यह बड़े-बड़े लोग जिन्हें आज की ज़बान में वी.आई.पी. कहा जाता है उन धन्धा कराने वाली औरतों से निकाह व ब्याह क्यूँ नहीं कर लेते। इस्लाम मज़हब में बड़े आदमी के लिए चार तक बीवियाँ रखने की इजाज़त है। तुम इस इस्लामी इजाज़त की मज़ाक़ उड़ाते हो और कहते हो इसमें औरत की हक़तल्फ़ी और उसकी बे इज़्ज़ती है और तुमने जो लाखों औरतों को पेशावर रन्डी और कालगर्ल बना डाला है यह कहाँ का इन्साफ़ है और कहाँ की बराबरी है। मैं पूछता हूँ कितने वी.आई.पी. हैं जो एक बीवी पर सब्र किये बैठे हैं? और कितने बड़े बड़े लोग रईस व अमीर पूंजीपती हैं जो सिर्फ़ एक औरत के साथ ज़िन्दगी काट कर मर जाते हैं। बस बात यह है कि एक पर सब्र तुम भी नहीं करते लेकिन फ़र्क़ यह है कि इस्लाम बीवी बना कर इज़्ज़त से रखने की इजाज़त देता है और तुमने उन्हें धन्धे कराने वाली पेशावर बना कर उनकी असमत व इज़्ज़त से खिलवाड़ किया है उनकी जवानी को लूट लिया और बुढ़ापे में जानवरों से बदतर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए छोड़ दिया। सही बात यह है कि मुआशरे की हर मुश्किल का हल और समाज की हर समस्या का समाधान सिर्फ़ इस्लाम ही है।

Scanned by CamScanner

एक दम सादा निकाह करना रसूलुल्लाह की सुन्नत है

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ने जितने निकाह फ़रमाए किसी में भी कोई जहेज़ आपने नहीं लिया। न आप कभी बारात लेकर किसी के घर गए। सारे निकाह बिल्कुल सादे ही हुए। ग्यारह पाकबाज़ ख़्वातीन मोमिनों की माँ बनीं और काशानए नुबुव्वत में अज़्वाजे मुतह्हरात बन कर रहीं। उन सब के साथ आप ने सिर्फ़ निकाह फ़रमाए और निकाह व ज़ुफ़ाफ़ के बाद असहाब को वलीमे के तौर पर कुछ खिलाया। न ही आप कभी बारात लेकर गए और न ही आपकी कोई बीवी साहिबा जहेज़ का सामान लेकर आपके यहाँ आईं।

मैं समझता हूँ अगर दुनिया पैग़म्बरे इस्लाम के इस तरीक़े को अपनाए तो करोड़ों लोगों को राहत की साँस मिल जाए और वह चैन की नींद सोने लगें। अगर किसी के पचास लड़कियाँ हों तब भी उसको कोई परेशान होने की बात नहीं क्यूँकि निकाह व शादी के मौक़े पर इस्लाम में लड़की और लड़की वालों पर एक पैसा ख़र्च करना भी वाजिब नहीं बल्कि लड़की को महर मिलना चाहिए।

मैं देख रहा हूँ कि आजकल लोग पेट की रोटी और तन के कपड़े के लिए परेशान नहीं हैं बल्कि ब्याह शादी के ख़र्चे और दूसरे बे-जा अरमानों और ख़्वाहिशों के लिए दुखी हैं और कमाते कमाते पागल हुए जा रहे हैं। और ज़्यादा तादाद तो बे ईमान, ख़ाइन व नियत ख़राबों की हो गई है। रिश्वत ख़ोर, बे ईमान, पैसे का कम करके दस पैसे लेने वाले, काम में हेरा फेरी करने वाले यही कहते हैं कि भाई क्या करें हमारे साथ लड़कियाँ हैं। मुआशरे पर नज़र रखने वाले ख़ूब जानते हैं कि अल्लाह के रसूल और आप के

सहाबा के तर्ज़ पर निकाह होने लगें तो समाज की रग से एक ज़हरीला काँटा निकल जाएगा और सारे मुआशरे को कितनी राहत मिल जाएगी। इसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है। गोया कि पैग़म्बरे इस्लाम की सिर्फ़ एक अदा और इस्लाम का सिर्फ़ एक अन्दाज़ पूरी दुनिया को राहत व सुकून चैन व आराम देने की ज़मानत है। हक़ फ़रमाया ख़ुदाए तआला ने क़ुर्आने करीम में :

"और हम ने तुम को सारे जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा।"

गोया कि यह बात तय है कि इन्सान ने अपनी क़ब्र ख़ुद ही खोदी है और अपनी नींद ख़ुद ही ख़राब कर रखी है।

धूमधाम से शादियाँ रचाना और बारातें चढ़ाना राजाओं बादशाहों, नवाबों और ज़मींदारों की देन है

इस उनवान के तहत मैं अपने भाईयों से गुज़ारिश करूँगा कि वह अपने नबी के तौर तरीक़े अपनायें इसी में भलाई है। जिसका कलिमा पढ़ा है उसी के बन कर रहो और तुमने अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ का कलिमा पढ़ा है न कि मआज़ल्लाह राजाओं, महाराजाओं, बादशाहों और ज़मींदारों का। फिर ब्याह शादियों के वक़्त तुम उस नबी को क्यूँ भूल जाते हो। जो न तुम्हें कभी भूला है और न ब-रोज़े क़ियामत भूलेगा।

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि वली वह है कि जिसको देख कर अल्लाह की याद आ जाए। साथ ही साथ मैं कहता हूँ कि उम्मती वह है जिसको देख कर नबी की याद आ जाए।

मैंने हदीस, तफ़सीर, तारीख़ की किसी किताब में नहीं

Scanned by CamScanner

पढ़ा कि रसूले पाक ﷺ के मुबारक ज़माने में कोई आपका सहाबी किसी लड़की वाले के घर सौ दो सौ पाँच सौ की बारात लेकर गया हो कि पहले वह उन सब को खाने नाश्ते कराए तब उसकी बेटी से निकाह होगा।

ताबेईन और तबअ़ ताबेईन के दौर में भी ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलती। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह के रसूल और उनके जांनिसारों का तरीक़ा यह नहीं है और धूमधाम से शादियाँ रचाना और लम्बी लम्बी बारातें चढ़ाना राजाओं, बादशाहों, नवाबों और ज़मींदारों की ईजादात हैं। जिनमें अक्सर ऐश व तरब, सुरूर व निशात में डूब कर अल्लाह व रसूल को भूल गए थे और दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी की आराइशों ने उन्हें ग़ाफ़िल और आख़िरत से बेख़बर और बेफ़िक्र कर दिया था। और अगर यह बारात को ठहरना, खाना, नाश्ता शर्त हुआ और ठहरा लिया गया हो कि इतनी बारात को इतने लोगों को लेकर हम आयेंगे और आप उन्हें खिलायेंगे तभी हम आप की लड़की से निकाह करेंगे तो इस बारात के नाजाइज़ व गुनाह होने में भी शक नहीं। और लम्बी लम्बी बारातें लेकर लड़की वालों के घर जाने में दोनों तरफ़ का नुक़सान होता है। लड़के वालों के लिए ले जाना किराया भाड़ा, गाड़ी, मोटरों और बसों का इन्तिज़ाम और लड़की वालों पर उन्हें ठहराने, बिठाने, खिलाने, पिलाने और नाश्ते कराने के इख़राजात कभी कभी यह बारातें लेने देने बाजे ताशे दोनों को बरबाद और क़र्ज़दार बना देते हैं और शादी ख़ाना आबादी नहीं बल्कि ख़ाना बरबादी हो जाती है। और जो समझाने वालों की मज़ाक़ उड़ाते थे उनकी ख़ूब खिल्ली उड़ाई जाती है और कभी कभी ख़ूब रुसवाई होती है।

और अब तो बारात बहुत दूर की बात है। बारात की तारीख़ तय करने के लिए भी लड़की वालों को सैंकड़ों लोगों को बकरे, मुर्ग़े खिलाना पड़ते हैं। तब तारीख़ तय होती है यानी जब तक लड़की वालों के घर सौ पचास

आदमी उम्दा उम्दा खाने नहीं खायेंगे तब तक उसकी लड़की के निकाह की तारीख़ तय नहीं हो सकती। यह सब एक मामूली सी बात यानी सिर्फ़ निकाह की तारीख़ तय करने के लिए इस क़द्र इख़राजात कराना या करना पागलपन नहीं है तो और क्या है? और जब बारात की तारीख़ तय करने के लिए इतना एहतिमाम व इन्तज़ाम होता है तो फिर आगे हो सकता है कि इस एहतिमाम का दिन तय करने के लिए भी एहतिमाम होने लगे। दरअस्ल बात यह है कि लोग बौरा गए है। यह अब किसी की मानेंगे नहीं इनका इलाज अब वह होने जा रहा है जो बौरए हुओं का होता है। ख़ुदाए तआ़ला होश और समझ अता फ़रमाए।

घोड़े ने नाल ठुकवाई तो मेंढकी ने भी टांग उठाई

इससे मेरा मक़सद वह ग़रीब व नादार, मुफ़लिस, मंगते और फक्कड़ हैं जो रईसों, अमीरों, बादशाहों, नवाबों और ज़मींदारों की शरीकी करते और शान शेख़ी दिखाते हैं। उधर रोते भी रहते हैं कि हम ग़रीब हैं, मोहताज हैं, दुखी और परेशान हैं, कोई काम धन्धा नहीं है, बहुत नुक़सान हो गया है। और फिर जब उनके यहाँ ब्याह शादी की तक़रीब हो या बेटा पैदा हो तो होश खो बैठते हैं। और शान शेख़ी दिखाने के लिए जो कछ न करें वह कम है और अमीरों की शरीकी में अपना दिवालिया निकाल लेते हैं और घोड़ा तो नाल को झेल गया मगर मेंढकी की टांग चिर जाती है।

ऐसे लोग भी हैं जो हराम कमा कर बेईमानी करके या किसी का क़र्ज़ा दबा कर मालदार बन जाते हैं और हराम की कमाई और पराई दौलत से ख़ूब ख़र्चे करते, खिलाते, पिलाते, यारों दोस्तों गाँव बस्ती वालों की उम्दा उम्दा दावतें करते, रिश्तेदारों को जोड़े पहनाते हैं। और इस ज़रिए से इज़्ज़त चाहते हैं तो उन्हें मालूम होना चाहिए कि इज़्ज़त ख़र्चे

Scanned by CamScanner

करने से नहीं मिलती है बल्कि इज़्ज़त ईमानदारी से कमाने से मिलती है और हलाल खाने से मिलती है।

ग़रीब आदमी के लिए समझदारी इसी में है कि वह ग़रीब बन कर रहे। ग़रीब होना कोई ग़लत काम नहीं है और ग़रीब के लिए ग़रीब बन कर रहने में ही चैन व सुकून है और अमीरों की शरीकी करने, शान शेख़ी दिखाने में मुसीबत और परेशानी है। बेइज़्ज़ती और बदनामी तेरे मेरे सामने हाथ फैलाने और क़र्ज़ख़्वाहों को उल्टी सीधी सुनना सभी कुछ हो सकता है।

समाज में बदतरीन क़िस्म के हैं वह लोग जिन पर तेरा मेरा क़र्ज़ा सवार हो और वह सड़कों पर बाबूजी बन कर निकलते हैं। पैन्ट की जेबों में हाथ डाले हीरो बने घूमते हैं और लोग सामने न भी सही लेकिन उनकी बुराई करते हैं कि उसने मेरी बेईमानी की है या मेरे काम के पैसे नहीं दिये हैं या मुझ से उधार लेकर खाए बैठा है। इस फ़ैशन में रंगे बाबू जी से वह ग़रीब बहुत अच्छा है जो घटिया क़िस्म के कपड़े पहने सादा लिबास में पैदल या साइकिल पर घर से निकलता है लेकिन उसने न किसी की बेईमानी की है और न उस पर किसी का क़र्ज़ा है।

दुल्हन घर में और क़र्ज़ख़्वाह दरवाज़े पर

मैंने कई बार ऐसा देखा और सुना है कि एक साहब ने अपनी शादी में ख़ूब ख़र्चा कर डाला और दोस्त जो कहते रहे करते रहे। किसी ने कहा कि पाँच हज़ार रुपया का सूट तो होना चाहिए। किसी ने मशवरा दिया कि बारात में कम से कम दस गाड़ियाँ होना चाहिए। किसी ने पूरी गली सजाने उसमें तरह तरह के डेकोरेशान का मशवरा दिया,

किसी ने कहा कि अगर ऊँचे क़िस्म का बैन्ड बाजा नहीं हुआ तो फिर मज़ा ही क्या आएगा, कोई बोला कि

वीडियो कैमरे और फ़ोटोग्राफ़र का साथ में होना तो बेहद ज़रूरी है। ग़रज़ यह कि जो जिसने कहा कुछ मेरा और कुछ तेरा इधर उधर से जुगाड़ बाज़ियाँ करके ख़ूब भारी बारात कर ली लेकिन अभी दो महीने नहीं गुज़रे थे कि दुल्हन घर में थी और एक क़र्ज़ख़्वाह दरवाज़े पर खड़ा गालियाँ बक रहा था। और कई जगह ऐसा भी सुना गया है कि लड़की की शादी में हस्ती मिटा कर औरतों के कहने में आकर ख़ूब शैख़ी दिखाई और शान कमाई लेकिन चन्द दिन बाद दामाद घर पर था और क़र्ज़ख़्वाह सर पर अब सब निकल गई शान और शैख़ी।

यारों दोस्तों का दिल रखने वाले बड़े बेवक़ूफ़ हैं

इससे मेरी मुराद वह लोग हैं जो यारों, दोस्तों के कहने में आकर अपनी हैसियत और हस्ती से ज़्यादा ख़र्चा कर बैठते हैं। भाईयों यार दोस्त न किसी के हुए हैं न होंगे तुम उनके अरमान पूरे करने के लिए और उनकी हर ख़ुशी के लिए ख़ुद को क्यूँ बरबाद कर रहे हो।

कुछ यार दोस्त शैतान भी होते हैं

ब्याह शादी या बच्चे की पैदाइश के वक़्त जो यार दोस्त या रिश्तेदार नाजाइज़ व हराम कामों का मशवरा देते हैं, बैन्ड बाजे, वीडियो कैमरे या फ़ोटोग्राफ़ी, नाच तमाशे करने के लिए कहते हैं यह सब शैतान का काम करते हैं। यह भी देखा कि बाज़ मुख़ालिफ़ और दुश्मन भी होते हैं और दोस्त बन कर लग जाते है, ख़ूब ख़र्चा करा डालते हैं। ज़मीनें और जाएदादें बिकवा देते हैं और यह शादी या बच्चे की ख़ुशी में सब कुछ भूले हुए हैं और दुश्मनों को दोस्त समझे हुए हैं। और कोई सही बात बताए, फ़ालतू ख़र्चों से रोके तो वह उन्हें दुश्मन नज़र आ रहा है और कहते हैं

Scanned by CamScanner

कि यह हम से जल रहे हैं। मैं कहता हूँ इसी को तो बेवक़ूफ़ी और पागलपन कहते हैं कि दुश्मनों को आदमी दोस्त और दोस्तों को दुश्मन समझने लगे। और जो लोग किसी को हराम काम करने मसलन बैन्ड बाजे बजवाने, वीडिया फ़िल्में चलाने और दिखाने, नाच तमाशे और मन्डली कम्पनी लाने का मशवरा देते हैं तो इन कामों को करने और कराने वालों और तामशाइयों का सारा गुनाह उन मशवरा देने वालों पर होगा। मसलन किसी ने अपनी बारात में बैन्ड बाजे बजवाए या नाच तमाशे कराए तो देखने वाले और तमाशाई सब गुनाहगार होते हैं लेकिन उन सारे तमाशाईयों और तमाशा करने वालों पर जितना अज़ाब अलग अलग होगा उन सब के बराबर उस बारात वाले पर होगा और फिर उस तमाशा करने और कराने वाले पर अलग अलग जितना अज़ाब होगा उन सब के बराबर उस मशवरा देने वाले पर होगा। ऐसा ही फ़रमाया है अल्लाह के रसूल सय्यिदे आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ने। मगर अज़ाब की फ़िक्र तो वह करे जिसको मरना भी है लेकिन जिसे सब दिन दुनिया में ही रहना हो उसे यह सब सोचने की क्या ज़रूरत है।

एलबम का रिवाज

ब्याह शादी की बढ़ती हुई हरामकारियों और फ़िज़ूल ख़र्चियों में अब एलबम बनवाने का फ़ैशन भी ज़ोर पकड़ गया है। दूल्हा और दुल्हन और बारात के मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर तरह तरह की तसवीरें और फ़ोटो खींच कर किताब की शक्ल में महफ़ूज़ कर लिये जाते हैं। इस में तरह तरह की ख़िलाफ़े शरअ़ गन्दी और बेहयाई वाली हरकतें होती हैं। बेपर्दा करके दुल्हन को फ़ोटोग्राफ़र के सामने लाया जाता है। जिसको निकाह की इजाज़त और इज़्न तक के लिए पर्दे में लाया जाता है उसको फ़ोटों खींचने वाले के सामने बेपर्दा होना पड़ता है। निकाह के वक़्त का फ़ोटो, रुख़सती के

वक़्त का फ़ोटो। सुसराल में जब आई तो सब से पहले फ़ोटो फिर रात को मियाँ बीवी को ख़ास कमरे में बिठा कर पहले फ़ोटो। ग़रज़ यह कि तरह तरह से बेहयाई का मुज़ाहिरा किया जाता है और सुसराल में आने के बाद घर मुहल्ले की औरतों से पहले फ़ोटोग्राफ़र मुँह दिखई करता है। और दूल्हा को भी बाद में देखने को मिलती है, फ़ोटोग्राफ़र को पहले। फ़ोटोग्राफ़ी तो इस्लाम में हराम है ही लेकिन यहाँ कई हराम होते हैं गोया कि एलबम क्या है हराम कामों की गठरी और पुलिन्दा। दरअस्ल बात यह है कि जिस अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें थोड़े पैसे दे दिये हैं। तुम उन्हें पा कर बौरा गए हो। और उसी अल्लाह को भूल गए हो। ख़ूब कूदो, फाँदो, नाचो, गाओ, बेहयाईयाँ, ग़ुन्डागर्दियाँ जो जी में आए सो कर लो। अब कुछ रह न जाए मगर याद रखो अल्लाह की पकड़ से निकल कर भाग न सकोगे और उसकी पकड़ सख़्त है। तुम से पहले भी इस दुनिया में बहुत से कूदने फाँदने वाले रह चुके है।

दूल्हा बन कर निकलने वाले जिस दिन जनाज़ा बन कर निकलेगा उस दिन को मत भूल

यह ऐसा नहीं है कि मैंने कोई गाली दे दी है बल्कि एक ऐसी सच्चाई है जिसे सब जानते हैं। कुछ याद रखते हैं और कुछ भूल गए और भूलने से क्या टल जाएगी या किसी की टली है?

और अगर किसी को मेरी बात नागवार मालूम होती हो तो दुनिया की तारीख़ में कोई ऐसी मिसाल बताए कि कोई शख़्स दूल्हा तो बना लेकिन जनाज़ा और मय्यत न बना हो।

ख़ुलासा यह कि जब दूल्हा बन कर निकलो, बारात लेकर चलो तो मौत के दिन को मत भूलो। अल्लाह व

Scanned by CamScanner

रसूल को नाराज़ न करो। हराम कामों से बचो, बीवी और उसके घर वालों को मत सताओ, माँगें और डिमान्डें न करो। हराम व फ़ालतू ख़र्चे न ख़ुद करो न दूसरे को करने के लिए मजबूर करो वरना याद रखो जिन्हें हम न समझा सके उन्हें क़ब्र समझा देगी और मौत का फ़िरिश्ता आँखें खोल देगा। और सब बौराना, कूदना, फाँदना और डाँस करना निकल जाएगा और मौत को तुम क्या दूर समझ रहे हो?

अल्लाह का फ़रमान है :

"ख़बरदार उन पर अज़ाब आने का वक़्त सुबह है और सुबह क्या क़रीब नहीं है।" (क़ुर्आन)

और मियाँ आख़िरत तो बाद की चीज़ है कुछ को तो दुनिया ही में ख़ूब सज़ा मिलती है। बारातों में ही लड़ाई, झगड़े हो जाते, लाठियाँ और गोलियाँ चल जाती हैं। और शादी के बाद की तअ़ल्लुक़ात की ख़राबियाँ, मियाँ बीवी की नाराज़गियाँ, ख़तरनाक क़िस्म की बीमारियाँ सब कूदने, फाँदने और डाँस करने निकाल देती है और यह ज़्यादातर वहाँ होता है जो ब्याह शादी के वक़्त आपे से बाहर हो जाते हैं।

आजकल बाज़ बारातियों और उनके दूल्हा को देख कर डकैतों और लुटेरों की याद आ जाती है। ऐसा खाना और वैसा नाश्ता इतना नक़द यह माँग और वह डिमान्ड यह बारात लेकर निकाह करने नहीं जा रहे हैं बल्कि यह किसी का घर बरबाद करने उसकी ज़मीन जाएदाद बिकवाने जा रहे हैं। यह ज़ालिम अत्याचारी हैं। यह बारात नहीं बल्कि लुटेरों और डकैतों का गिरोह है। यह सब वह लोग हैं जो मौत व क़ब्र को बिल्कुल भूल गए हैं। लेकिन उन्हें मालूम होना चाहिए कि यह मौत व क़ब्र से बच नहीं सकेंगे।

बारती सिर्फ़ खाने चाटने के यार

बारात, मंगनी, जोड़े पहनाने और तारीख़ तय करने के बहाने यह जो आप कई कई सौ लोगों को लड़की वाले के घर ले कर जाते हैं और उनके खाने नाश्ते और ख़ातिर तवाज़ो के लिए अपनी बीवी के घर वालों से लड़ते झगड़ते हैं। आपको मालूम है उनमें कौन आपका कितना हमदर्द व वफ़ादार है। उनमें ज़्यादातर वह हैं कि अभी आप पर कोई वक़्त पड़ जाए तो बजाए मदद करने के हँसी उड़ायेंगे। उन में कोई बवक़्त ज़रूरत हज़ार रुपया उधार देने को तय्यार नहीं होगा। और दे दे तो एक माह के बाद ही तक़ाज़े शुरू कर देगा कि चाहे घर बेच कर दो लेकिन मेरे पैसे दो। इस से हमारा मक़सद सिर्फ़ यह है कि लम्बी लम्बी बारातें ले जा कर और उनकी ख़ातिर ख़िदमत के लिए अपने क़रीबी रिश्तेदारों को बरबाद करना। बे हिसाब ख़र्चा कराके उन्हें तंगदस्त बनने के लिए मजबूर कर देना अक़्लमन्दी नहीं है। वह आप का क़रीबी अज़ीज़ और ख़ास रिश्तेदार है। जब उसकी बेटी या बहन आपकी बीवी है तो आपकी परेशानी को अपनी परेशानी समझेगा वक़्त पर आपके काम आएगा। उसको आप मुसीबत में डाल रहे हैं और उसको कंगाल कर रहे हैं, उन बारातियों की ख़ातिर कि उनमें से अक्सर मुसीबत के वक़्त आपकी मज़ाक़ उड़ाने वाले हैं। वक़्त पड़ने पर काम आने वाले तो बहुत ही कम होंगे। वैसे तो इस्लाम में बारात लेकर जाने की कोई शरई हैसियत नहीं और लड़की वाले पर शरअ़न दूल्हा तक को खिलाना वाजिब नहीं है। लेकिन अगर दो चार दस पाँच लोग दूल्हा के साथ चले जायें और वह अख़लाक़न उन्हें कुछ खिला पिला दे तो कुछ हरज भी नहीं है। बस इतने तक तो हमारी समझ में आता है लेकिन उससे ज़्यादा सब अज़ाब व वबाल है। मुसीबत ही मुसीबत है। और मक़ामी शादियों में जहाँ लड़कियाँ और लड़के एक ही बस्ती या मुहल्ले के हों वहाँ

Scanned by CamScanner

यह बारातें ले जाना और जबरन लड़की वालों पर उनके खाने ख़र्चे का बोझ डालने की क्या ज़रूरत है? सब फ़ालतू और बेकार की बातें हैं ख़ुराफ़ातें हैं। और खाने से पहले यह जो बारात के लिए नाश्ते का मर्ज़ पैदा हो रहा है। यह तो कोढ़ में खाज है। जब खाना तय्यार है और खाने का वक़्त भी, फिर उस नाश्ते का क्या मअ़ना? नाश्ता तो उस खाने को कहते हें जो सुबह को खाया जाता है। अब यह वक़्त बेवक़्त नाश्ते कैसे होने लगे? और यह मांगें मांग कर नाश्ते और खाने लेना और खानों की फ़रमाइशें करना भिकमंगों का काम है। और मजबूर करने या मजबूरी से फ़ाइदा उठाते हुए ज़बरदस्ती खाना पीना डकैतों और लुटेरों का काम है। अब ख़ुद आप ख़ुद फ़ैसला कर लीजिये कि आप भिकमंगे हैं या लुटेरे और आपकी बारात मांगने वाले फ़क़ीरों की टोली है या डकैतों का गिरोह?

किसी की मजबूरी से फ़ाइदा उठाना शरीफ़ इन्सान का काम नहीं

आजकल जब से बात चीत शुरू होती है तभी से लड़के और उनके घर वाले लड़की वालों को तंग करना शुरू कर देते हैं। अपने और अपने घर वालों, रिश्ते दारों, यार, दोस्तों के लिए जोड़ों घोड़ों का सवाल हर वक़्त तरह तरह की फ़रमाइशें, मांगें और डिमांडें कभी मंगनी और सगाई के नाम पर, कभी तारीख़ तय करने के बहाने, कभी त्योहारों और ईदों की आड़ लेकर आख़िर आप ने कभी यह भी सोचा कि वह आपके यह नख़रे क्यूँ उठा रहा है। उस्से क्यूँ झेल रहा है। बात सिर्फ़ यह है कि जवान लड़की घर में रखने की चीज़ नहीं होती और शरीफ़ इन्सान को जवान लड़कियों का घर में रहना यानी बेनिकाह रहना अच्छा नहीं मालूम होता। यह उसकी मजबूरी है जिससे आप

फ़ाइदा उठा रहे हैं और उसको नोचने खसोटने में लग गए हैं। और वह अपनी मजबूरी की वजह से आप से अपने जिस्म की खाल उतरवा रहा है। लेकिन मैं कहता हूँ किसी की मजबूरी से फ़ाइदा उठाना यह शरीफ़ों का काम नहीं है बल्कि कमीनों और रज़ीलों का, बेरहम डकैतों का और ज़ालिम लुटेरों का काम है।

भाईयो घर लड़की वालों के भरने से नहीं भरता बल्कि अल्लाह भरता है

कितने लोग देखे कि उन्होनें फ़रमाइशें करके लड़की वालों से ख़ूब रुपया पैसा और साज़ो सामान ऐंठ लिया लेकिन ज़िन्दगी भर तंग हाल व परेशान रहे। अगर मालदार भी रहे लेकिन सुकून व चैन नहीं क्यूँ कि ज़ालिम को कभी चैन नहीं मिलता और बेरहम आराम से नहीं सोता। और कितने ही लोगों ने शरीफ़ों की ग़रीब बेटियों को बीवी बना कर रखा न कभी ताने दिये न मार मार कर माएके में रुपया लेने भेजा तो ख़ुदाए तआ़ला ने उनके घरों को भर दिया और उन्हें साहिबे माल व मताअ़ बना दिया। और किसी की बेटी को बीवी बना कर तंग करने वाले उसकी कमज़ोरी और मजबूरी से फ़ाइदा उठाने वाले उसके बहाने से सुसराल वालों को लूट खसोट मचाने वाले ज़्यादातर निकम्मे निखट्टू आराम तलब और काहिल होते हैं। जिनका दिल काम में नहीं लगता और यह शादी नहीं करते बल्कि लड़कियों को ब्लेकमेल करते हैं अपनी इन शैतानी आदतों का अन्जाम उन्हें दुनिया ही में देखने को मिल जाता है और आख़िरत का अज़ाब तो दर्दनाक है और सुकून व चैन तो मियाँ जिसे अल्लाह देता है उसी को मिलता है। चाहे तो बिल्डिंगो और कोठियों के एयरकन्डिशन कमरों मे तड़पाए और चाहे तो झुग्गियों और झोंपड़ियों में आराम व चैन से सुला दे।

Scanned by CamScanner

बूढ़े और बूढ़ियों के दिमाग़ ज़्यादा ख़राब हैं

कई जगह देखने और सुनने में आया कि लड़का शादी करने के लिए आमादा है लड़की वाले भी तय्यार हैं और रिश्ता भी सही है लेकिन लड़के के माँ बाप तय्यार नहीं हैं। यह बड़े मियाँ और बड़ी बी हाजी भी हैं और नमाज़ी भी हैं लेकिन अगर कोई शरीफ़ व ग़रीब आदमी अपनी शरीफ़ बेटी के रिश्ते की बात चीत उनके लड़के के लिए उन से करता है तो यह मुँह उठा कर बड़ी बेरुख़ी से कहते हैं अरे भाई अभी तो हम कई साल तक शादी नहीं करेंगे। मगर दिल में है कि शादी तो करेंगे लेकिन ख़ूब ज़्यादा मालदार रिश्ता आएगा तभी करेंगे और इसी तलाश व जुस्तजू में लड़का बूढ़ा हुआ जा रहा है मगर इन बूढ़े माँ बाप को बुढ़ापे में लड़की की नहीं बल्कि छप्पन करोड़ की चौथाई की तलाश है। यह मरने को बैठे हैं क़ब्र में पैर लटके हैं दुनिया में आग लगा रहे और माहौल को जला रहे हैं। उन्हें यह भी मालूम नहीं ग़रीब बाप की शरीफ़ बेटी जितना तुम्हारा ख़्याल करेगी, लाखों करोड़ों का सामान और जहेज़ लेकर आने वाली रईस व अमीर की लड़की सब से पहले तुम्हारी चारपाई घर से बाहर निकाल कर फेंकेगी और बजाए ख़िदमत करने के बुढ़ापे में उल्टी ख़िदमत कराएगी और बच्चे नहीं खिलाए तो रोटी तो रोटी पानी तक नहीं पिलाएगी। बुढ़ापे और कमज़ोरी व बीमारी में रेंठ थूक खंखार बलग़म वग़ैरा की गन्दगी अगर घर में कर दी तो बुढ़ापे में पिटना भी पड़ सकता है। और यह सब वह बातें हैं जो माहौल में आजकल घर घर देखी जा सकती हैं। लिहाज़ा उन बूढ़े और बूढ़ियों से मेरी गुज़ारिश है कि यह अगर ख़ैरियत चाहें और बुढ़ापे में अपनी बेइज़्ज़ती और नाक़दरी से बचना चाहें तो ग़रीबों शरीफ़ों की शरीफ़ व पाकबाज़ कम पढ़ी लिखी या बेपढ़ी बस

दीन की थोड़ी ज़रूरी चीज़ों से वाक़िफ़ लड़कियों से अपने लड़कों के रिश्ते करें वरना दुनिया में लगाई हुई आग में ख़ुद ही जलना पड़ सकता हैं और आख़िरत की आग तो बड़ी भयानक और दर्दनाक है। हदीसे पाक में है रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"जब ऐसा शख़्स पैग़ाम भेजे जिसकी दीनदारी और अख़लाक़ में कोई कमी न हो तो रिश्ता करो वरना ज़मीन में फ़ितना व फ़सादे अज़ीम होगा।" (तिर्मिज़ी, हाकिम, इब्ने माजा बहवालए बहारे शरीअ़त, हिस्सा 7, सफ़हा 44)

यानी दीनदारी और अख़लाक़ अच्छे हों तो महज़ दौलत मालदारी न होने की वजह से रिश्तों को ठुकराना मुसलमान की शान नहीं है। लालच और बेवक़ूफ़ी में कितने इन बौराए हुए बूढ़ें बूढ़ियों ने बड़े घरानों की माडर्न स्मार्ट घाट घाट का पानी पीने वाली लड़कियों से अपने बेटों की शादी कर दी लेकिन बाद में निहायत ख़राब दिन देखने को मिले। जेलों और थानों की हवा तक खाना पड़ी। बुढ़ापे में पका पका कर या मांग मांग कर खाना पड़ रहा है।

नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात के बाद भी निकाह हो सकता है

कभी कभी ऐसा भी होता है कि आजकल के माहौल की बे राह रवी बेपर्दगी, लड़कियों लड़कों के मेल जोल बातचीत दोस्ती व तअ़ल्लुक़ात पर रोक न लगाने की वजह से उनमें नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात क़ाइम हो जाते हैं। इस मौक़े पर लड़की वाले तो यह बेवक़ूफ़ी करते हैं। उस वक़्त सो रहे थे जब लड़का घर में आता जाता था। आँखें फोड़ ली थीं या फूट गई थीं। जब लड़की उस लड़के से बेतकल्लुफ़ बातचीत करती थी या उसके साथ घूमने जाती थी। क्या बूढ़े बाल बच्चेदार हो गए और तुम को अभी तक यह मालूम नहीं हुआ कि मर्द में औरत की तरफ़ और औरत में मर्द

Scanned by CamScanner

की तरफ़ कितनी रग़बत कशिश और नफ़्सानी मैलान रखा गया है। आग और पैट्रोल जब इकट्ठे होंगे तो आग बुझाना मुश्किल हो जाएगा। अब बड़े इज़्ज़तदार बन रहे हैं और थाने के चक्कर लगा रहे हैं नाक कट गई। अब उसे जुड़वाने चले हैं। अरे नादान यह अगर जुड़ भी गई तो निशान फिर भी नहीं जाएगा। इसीलिए तो इस्लाम में पर्दा रखा गया। वह 20 साल की होकर भी तेरी नज़र में लल्ली और गुड़िया ही है। मगर उससे भी पूछा है कि उसके जिस्म में कितनी आग है। जिनको बुढ़ापे में भी एक दूसरे के बग़ैर चैन नहीं वह अपनी जवान औलाद को बेनफ़्स ख़्याल करते हैं यह इस दौर की बड़ी बेवकूफ़ी है। सही बात यह है कि अब यह थाने के चक्कर इज़्ज़त व बदनामी को वापस नहीं ला सकेंगे बल्कि यह गन्दगी को कुरेद कर और ज़्यादा बदबू को फैलाने वाली मिसाल है। अब ख़ैरियत व भलाई इसी में है जो जिससे मुतमइन हो गया उसको उसी के साथ रहने दे और नाजाइज़ काम को जाइज़ तरीक़े से होने दे और निकाह के लिए राज़ी हो जा और हराम कारी को हलाल बनाने के लिए सर झुका दे। कभी ऐसा भी सुनने और देखने में आया है कि नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात के बाद लड़की भी राज़ी और उसके घर वाले भी और लड़का भी आमादा है। लेकिन लड़के के माँ बाप के पेट में दर्द हो रहा है कि ऐसे सादा निकाह कैसे हो सकता है। बूढ़े को बारात और जहेज़ की पड़ी है वह पागल बना घूम रहा है और हराम को हलाल होने से रोक रहा है। अभी हाल में एक ऐसा ही निकाह कराने के लिए अहले मुहल्ला और पन्चायत वालों को हुकूमत का सहारा लेना पड़ा और थानेदार ने निकाह पढ़वाने के लिए जब क़ाज़ी को बुलाया तो बाप को इतनी देर के लिए हवालात में बन्द करना पड़ा।

एक जगह एक लड़के ने मुहल्ले की लड़की से जबरन बदकारी की। बस्ती के लोगों ने निकाह करने की तजवीज़

पास कर दी। लड़का भी राज़ी और लड़की भी और उसके घर वाले भी लेकिन लड़के को उसके बाप ने ग़ाइब कर दिया और किसी रिश्तेदारी में भेज दिया। ख़ुलासा यह कि आजकल नौजवान लड़कों और लड़कियों से भी ज़्यादा कुछ बूढ़े और बूढ़ियों के दिमाग़ ख़राब हैं और माहौल को बिगाड़ने और आग लगाने में इनका ज़्यादा हाथ है।

ख़ैरियत चाहो तो शरीफ़ों की बेटियों से शादी करो

बीवी और दुल्हन घर लाने का मक़सद घर में चैन व सुकून हासिल करना होता है और यह शरीफ़ सीधी सच्ची पर्दानशीन घरेलू भोली भाली औरतों से ही हासिल हो सकता हैं ज़्यादा पढ़ी लिखी स्मार्ट और माडर्न लड़कियाँ उमूमन वबाले जान साबित होती हैं। नाकों चने चबवाती हैं, उल्टी ख़िदमत लेती हैं और वह बूढ़े और बूढ़ियाँ जो अपने लड़के के लिए ख़ूब मालदार घर की ज़्यादा जहेज़ लाने वाली हीरोईन तलाश कर रहे थे उनका तो ख़ूब इलाज करती हैं और उन्हें सही कर देती हैं। और शादी के वक़्त समधियाने का क़ीमती जोड़ा पहन कर जो बड़े मियाँ और बड़ी बी बहुत ख़ुश थे घर भर के जहेज़ देख कर फूले नहीं समा रहे थे। शादी के बाद उनकी ख़ूब मरम्मत हो रही है। और घर घर रोते पीटते और गिले शिकवे करते फिर रहे हैं। नादानों बीवी औरत या दुल्हन तो वही बेहतर जो सीधी सच्ची, भोली भाली, कम से कम पढ़ी लिखी हो जिसने घर का दरवाज़ा कम देखा हो और जिसने हर घर देखा हो अगर तुम्हें दर दर की ठोकरें न खिलाए तो बताना।

Scanned by CamScanner

लड़की देखने के बहाने ख़र्चे कराना

ऐसा भी ख़ूब देखने में आ रहा है। दस-दस बीस-बीस मर्द और औरतें लड़की देखने जाते हैं। वह बेचारा उनकी दिलजोई के लिए हस्ती मिटा कर ख़ातिर व तवाज़ो करता है और हज़ारों रुपया ख़र्च कर डालता है और यह बेरहम संगदिल वापस आकर मना कर देते हैं कि लड़की पसन्द नहीं। मैं कहता हूँ जब लड़की पसन्द नहीं थी तो फिर यह ख़र्च कराने की क्या ज़रूरत थी। क्या मुर्ग़े बकरे और मिठाईयाँ ठूसे बग़ैर लड़की देखने की कोई सूरत नहीं थी? बस बात यह है कि तुम दीन छोड़ कर ज़ालिम व बेरहम हो गए जफ़ाकार और सितमगर हो गए और एक दूसरे का ख़ून पीने में लग गए। क़ब्र व हश्र व जहन्नम को बिल्कुल भूल गए और चन्द रोज़ा दुनिया की ज़िन्दगी पर फूल गए।

ब्याह शादी के ग़ैर ज़रूरी इख़राजात हिमाक़त व बेवक़ूफ़ी हैं और मसलिहत के ख़िलाफ़ हैं

ज़रूरी नहीं है जो दो इन्सान निकाह के ज़रिए आपस में जुड़ रहे हैं वह जुड़े ही रहें और ज़िन्दगी भर साथ रह सकें। मिज़ाज अपना अपना दिमाग़ अपना अपना, आदतें अपनी अपनी। तो हो सकता है कि ज़िन्दगी साथ में गुज़ारना सिर्फ़ दुश्वार ही नहीं बल्कि नामुमकिन हो जाए। इन्सान की फ़ितरत ही कुछ ऐसी है कि कभी किसी को किसी के साथ रह कर सुकून मिलता है और कभी कोई किसी से जुदा और

अलग हो कर राहत महसूस करता है। इसलिए इस्लाम में तलाक़ रखी गई। तलाक़ में भी हिकमत है और तलाक़ भी रहमत है। यह तो उन जोड़ों से पूछिये कि वह एक दूसरे के साथ रहने पर मौत को तरजीह देते हैं। और गोलियाँ खा कर या फाँसी लगा कर मरते हैं। क्या ऐसे वाक़िआत व हादसात की आजकल कमी है कि मुझको समझाने की और बताने की ज़रूरत हो? क्या अख़बारात का कोई शुमारा आप को किसी ऐसे वाक़िए से ख़ाली नज़र आ रहा है? तो तलाक़ का मतलब सिर्फ़ यही है कि बजाए फाँसी लगा कर या ज़हरीली गोलियाँ खाकर मरने के दोनों का रास्ता अलग-अलग कर दिया जाए।

यह भी हो सकता है कि किसी तबई हिस्सी कमज़ोरी या बीमारी की वजह से मर्द औरत के या औरत मर्द के लाइक़ ही न हो। क्या लड़के का नामर्द होना या लड़की का हमबिस्तरी और सोहबत के क़ाबिल न होना एक मख़सूस बीमारी की वजह से यह सब कोई नामुमकिन या क़ाबिले तअ़ज्जुब बातें नहीं हैं। तो इन सब सूरतों में शादी के वक़्त के तमाम इख़राजात, लेने देने, हदिये, तोहफ़े बेमअ़ना और बेकार हो कर रह जाते हैं। सारी फ़िज़ूलख़र्चियाँ धुआँ बन कर उड़ जाती हैं और सब कूदने फाँदने, नाच और तमाशे वीडियो फ़िल्में और फ़ोटोग्राफ़ियाँ मौत के सन्नाटे में तब्दील हो जाती हैं। एक बार ऐसा भी देखा गया कि भारी मंगनी सगाई हुई फिर लम्बे ख़र्चे के साथ तारीख़ तय हुई, बारात बढ़ी, खाने पीने और नाश्ते हुए। और बस्ती वालों में से किसी का बारातियों से किसी बात पर झगड़ा हुआ ख़ूब दोनों तरफ़ से मार पीट हुई पुलिस तक आ गई और बारात को जैसी आई थी पिट पिटा कर वैसे ही वापस होना पड़ा। सब खाने ख़र्चे बेकार होकर रह गए।

Scanned by CamScanner

इस्लाम हिकमतों वाला मज़हब है

इस्लामी नुक़तए नज़र से निकाह से पहले कोई ख़र्चा किसी पर शरअ़न लाज़िम नहीं। निकाह और मियाँ बीवी की मुलाक़ात यानी ज़ुफ़ाफ़ के बाद शैहर के लिए कुछ लोगों को खिलाना पिलाना सुन्नत है जिसे 'वलीमा' कहते हैं। वह भी अगर मौक़ा हो तब रसूले पाक ﷺ ने जो निकाह फ़रमाए सब में वलीमा देने का सबूत नहीं मिलता है। हाँ बाज़ में दिया, वह भी बड़ी सादगी के साथ ताकि यह भी उम्मत पर वाजिब व फ़र्ज़ न हो जाए। इस्लाम जैसे अमीरों का मज़हब है वैसे ही ग़रीबों का। और दामने मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ में सबका ठिकाना है।

ख़ुलासा यह कि ब्याह शादी में जो रस्में नाजाइज़ व हराम हैं मसलन नाच-गाने, बैन्ड-बाजे, आतिशबाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ियाँ, एलबम बनवाना वग़ैरा उनसे तो बचना निहायत ज़रूरी है क्यूँकि अल्लाह को नाराज़ करके जो ख़ुशी हासिल हो वह ख़ुशी नहीं है और जो रस्में जाइज़ व हलाल या मुस्तहब हैं मसलन खाने खिलाने, हदिये, तोहफ़े जहेज़ और दूसरे लेने देने उनकी पाबन्दी भी इस हद तक नहीं होना चाहिए कि यह न हों तो निकाह ही न होगा ख़्वाह लड़कियाँ और लड़के बूढ़े हो जायें और अब चूंकि माहौल ऐसा ही हो गया है। रस्मो रिवाज को इतना ज़रूरी समझ लिया गया है कि उनकी वजह से निकाह नहीं हो पा रहे हैं। लिहाज़ा मेरा मशवरा तो यह है कि अब जो एक दम बिल्कुल सादा निकाह करेगा वह यक़ीनन इस दौर में बड़े अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ होगा। उसको मुस्तफ़ा प्यारे की सुन्नत को ज़िन्दा करने का सवाब मिलेगा। रस्मो रिवाज ब्याह शादी के लम्बे लम्बे ख़र्चों की वजह से निकाह नहीं हो पा रहे हैं और जवान लड़कों और लड़कियों का घरों में बे-निकाह रहना ज़िनाकारी, गुन्डागर्दी और बेहयाई के बीज बोना है और शैतान को ख़ुश करना है।

एक फ़रमाने रसूल

हदीसे पाक में है कि फ़रमाया रसूले पाक ﷺ ने "सब से ज़्यादा बरकत वाला निकाह वह है जिसमें बोझ हल्का हो (यानी ख़र्चा कम हो)

(मिश्कात, सफ़हा 268)

लगता है कि आजकल जो घर घर में झगड़े लड़ाईयाँ और शादी के बाद की मुक़दमे बाज़ियाँ इसी फ़रमाने रसूल पर अमल न करने की वजह से हैं कि आपने निकाह को हल्का बेबोझ करने के लिए फ़रमाया और उसमें बरकत बताई और तुमने निकाहों को अज़ाब बना डाला और बे-जा ख़र्चों ने वह हालात पैदा कर दिये हैं कि लगता है कि आने वाले वक़्त में निकाह शादियाँ तो कम होंगी अलबत्ता ज़िनाकारी व बदकारी ज़्यादा होगी और यह होगा कि यह उसके साथ भाग गई या वह उसको भगा कर ले गया।

आज माहौल यह है कि अगर दरमियानी या ऊँचे तबक़े के लोगों में किसी लड़के का किसी लड़की से बिल्कुल सादा निकाह कर दिया जाए और लड़की को रुख़सत कर दिया जाए न बारात हो, न जहेज़, न लेने देने, न मंगनी, न सगाई तो लोग उसको इतना बुरा ख़्याल करेंगे कि इतना किसी हराम काम को भी बुरा नहीं समझते। मैं कहता हूँ यह गुमराही नहीं तो और क्या है? अफ़सोस कि जिस तरह पैग़म्बरे इस्लाम और आपके जानिसारों ने निकाह फ़रमाए तुम उस तरह के निकाहों को हराम कामों से भी ज़्यादा बुरा समझने लगे कि हराम काम करने वालों को तो तुम न टोकते हो न रोकते। और बिल्कुल सादा निकाह किया जाए तो लोग जीना दूभर कर देंगे। मुँह पिचकाए फिरेंगे जिनते मुँह होंगे उतनी ही बातें। अफ़सोस कि तुम इस्लाम से कितने दूर हो चुके हो।

Scanned by CamScanner

निकाह अल्लाह की रहमत है

निकाह अल्लाह की रहमत, रसूल की सुन्नत, दीन की हिफ़ाज़त है। इसको जितना आम किया जाए बेहतर है। और निकाह जितने ज़्यादा होंगे उतनी ही बदकारियाँ कम होंगी। इसको आसान करो, हल्का करो, बे ख़र्चा या कम से कम ख़र्चे में करो अगर कोई बेवा औरत निकाह करे तो इसको बुरा मत मानो। यूँही कोई औरत हज को जाना चाहती है और साथ के लिए महरम या शौहर नहीं किसी जाने वाले से निकाह करके चली जाए या किसी के साथ निकाह करके उसको अपने साथ हज में ले जाए तो उसमें भी ऐब की बात नहीं। यूँही कोई औरत किसी भी क़ौम व मुहल्ले के दीनदार आदमी की ख़िदमत करना चाहे ख़्वाह बूढ़ा ही सही और वह इसके लिए उस से निकाह कर ले तो उसमें भी कुछ हरज नहीं बल्कि बेहतर है क्यूँकि निकाह का मक़सद सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील नहीं बल्कि एक दूसरे की ख़िदमत, तीमारदारी या तन्हाई को दूर करना भी है। आज माहौल यह है कि एक बेवा औरत के घर एक शख़्स का आना जाना था। दोनों अपने अपने घर बाल बच्चे दार थे लेकिन जब निकाह के लिए कहा गया तो तय्यार नहीं हुए। और नाजाइज़ तौर पर एक दूसरे से मिलते रहे। उन्हें समझाया गया कि निकाह कर लो फिर एक दूसरे से मिलते रहो ख़्वाह अपने अपने घर अपने अपने बच्चों में रहो। निकाह के बाद यही आना जाना जो नाजाइज़ तरीक़े पर है जाइज़ हो जाएगा और जो हराम हो रहा है यह हलाल हो जाएगा तो यह बात उनकी समझ में नहीं आई और नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात बाक़ी रहे लेकिन निकाह करके उन्हें जाइज़ नहीं किया। यह सब गुमराहियाँ हैं और इस्लाम से दूरियाँ हैं।

मज़हबे इस्लाम का जवाब नहीं

मज़हबे इस्लाम में शादी के मौक़े पर तो लड़की वालों पर कोई ख़र्चा लाज़िम व वाजिब नहीं। हाँ यह है कि जब बाप का इन्तिक़ाल हो तो जिस तरह बेटों का उसकी जाएदाद में हिस्सा है उसका आधा हिस्सा बेटियों को दिया जाए ख़्वाह जाएदाद मनक़ूला हो या ग़ैर मनक़ूला। उसमें कितनी हिकमतें और मसलहतें हैं मुलाहिज़ा फ़रमायें :

(1) माएके वाले शादी में इख़राजात करके जहेज़ देकर बारात को खिला कर दूल्हा और उसके घर वालों को जोड़े पहना कर यह समझ लेते हैं कि हमने लड़की का हक़ अदा कर दिया और जो उसका था उसको दे दिया और यह चीज़ें फ़ना हो जाती हैं और अगर बची भी तो उनकी वह क़ीमत नहीं रहती। अब अगर इन हवा में उड़ जाने वाले फ़ालतू ख़र्चों के बजाए बाप के तर्के और जाएदाद में लड़की का हिस्सा रहे तो वह उसकी मज़बूती है और ज़िन्दगी गुज़ारने का एक सहारा। अब अगर शौहर से न निभ सके या शौहर मर जाए तो बाप की कमाई और उसमें लड़की का हिस्सा काम आएगा। ब्याह शादी में जो ख़र्च हो गया वह काम नहीं आएगा। उसमें से अब क्या रखा होगा?

(2) शौहर आवारा अय्याश मतलबपरस्त और धोकेबाज़ भी हो सकता है और हो सकता है कि सुसराल में ठिकाना न लगे और माएके वाले शादी के वक़्त जहेज़ देकर बारात को खाना खिला कर जोड़े पहना कर पीछा छुड़ा बैठें। अब बताइये वह कहाँ की रही।

(3) शौहर से निबाह न होने की बिना पर अगर तलाक़ हो तो इस्लामी क़ानून में लड़की को शौहर से महर दिलाया जाए और बाप के तर्के से हिस्सा तो जिसको शौहर की तरफ़ से इद्दत का नान नफ़क़ा और महर और बाप की तरफ़ से जाएदाद में हिस्सा दिलाया गया हो उसके बारे में यह कहना कि इस्लाम मज़हब ने औरत को लावारिस छोड़ दिया है। यह

Scanned by CamScanner

या तो जहालत व नावाक़िफ़ी है या इस्लाम को बदनाम करने की साज़िश और तअस्सुब परस्ती। और कुछ भी न सही तो इस्लाम में तो हर साहिबे निसाब पर साल में एक मरतबा ज़कात निकालना फ़र्ज़ क़रार दिया गया है। यह ऐसे ही लावारिस मर्दों, मोहताज औरतों के लिए है। अलग अलग अपने तौर पर भी दिया जा सकता है और बैतुल माल इस्लामी फ़ंड बनाक कर उससे भी लावारिस औरतों के वज़ीफ़े मुक़र्रर किये जा सकते हैं।

(4) ब्याह शादी के वक़्त इख़राजात न किये जायें और बाप के तर्के से उसके मरने के बाद लड़की को हिस्सा दिया जाए तो अगर किसी की पचास बेटियाँ भी हों लेकिन उसको अपनी ज़िन्दगी में उनके निकाह की कोई फ़िक्र न होगी सुकून से ज़िन्दगी कटेगी। ईमानदारी से कमाएगा और हलाल खाएगा। और उसके बेटों पर भी उसके मरने के बाद कोई बोझ नहीं। क्यूँकि लड़की का हिस्सा बाप की कमाई और उसकी जाएदाद में है न कि भाईयों की, यानी उनका अपना कुछ नहीं जाएगा। बाप के छोड़े हुए में से जाएगा तो उनको उसमें परेशान नहीं होना चाहिए और बाप जिस तरह बेटों का है वैसे ही बेटियों का भी। तो उन्हें बाप की कमाई और जाएदाद में से बहनों को हिस्सा देने में अगर तकलीफ़ होती है तो यह एक निहायत ग़लत बात है। वह तुम्हारा नहीं ज रहा है वह जिसका है उसको जा रहा है। आख़िर तुम्हें भी तो मिला है बल्कि उन से दो गुना मिला है। यह कहाँ क इन्साफ़ है कि जिस बाप के बेटे हैं उसी की बेटियाँ। फि जब बेटियों को उसके तर्के से हिस्सा दिया जाए तो बेटियो को क्यूँ नहीं? उसको मुकम्मल तौर पर शौहर का मुहताज क्यूँ बनाया जा रहा है?

आजकल आमतौर से बेटे बाप की जाएदाद के ऊप क़ब्ज़ा कर लेते हैं। बहनों को हिस्सा नहीं देते। य हक़तल्फ़ी, ज़ुल्म और बेईमानी है। यह हिस्सा बहनों के माफ़ करने से माफ़ भी नहीं होता। बहरहाल देना ज़रूरी है।

(5) चूंकि आजकल लड़कियों को बाप की जाएदाद से बतौर विरासत कुछ न देने का रिवाज पड़ गया है और ब्याह शादी के इख़राजात को तर्के का बदल ख़्याल किया जाता है। तो लड़कियाँ शादी के वक़्त ऐसी रुख़सत होती हैं। जैसे उनका जनाज़ा जा रहा हो क्यूँकि अब वहाँ उनका कुछ नहीं रहा। अब वह वहाँ दो रोटी भी खायेंगी तो मिहमानी के तौर पर और एहसान लेकर। कभी ठहरेंगी तो तो पराया घर समझ कर तो शादी के वक़्त रुख़्सती का ग़म उन्हें ज़्यादा होता है। और शादी की ख़ुशी कम। हमेशा के लिए जाने के सदमे तले दब जाती है। और उसी लड़की को अगर यह मालूम हो कि यहाँ मेरा हिस्सा है। जो हर हाल में मेरा है मुझको मिलना है तो रुख़्सती का सदमा यक़ीनन कम होगा क्यूँकि इन्सान जहाँ पैदा होता है और जिस माहौल में परवरिश पाता है उसकी महब्बत उसके दिल से कभी नहीं निकलती तो ऐसी जगह उसकी मिल्कियत रहे यह एक बेहतर बात है।

शादी के वक़्त के इख़राजात को बाप की जाएदाद से लड़की का हिस्सा समझना ग़ैर मुस्लिमों की देन है

आज कोई बेटी अगर बाप के तर्के से अपने हिस्से का मुतालबा करे तो यह कहा जाता है कि हमने तेरी शादी में यह किया और यह किया। यह जहालत व गुमराही है और यह सब ग़ैर इस्लामी बातें जो मुसलमान होकर लोग करते हैं। कोई माने न माने अमल करे न करे लेकिन यह बता देना और ज़ाहिर करना ज़रूरी है कि इस्लामी मिज़ाज यही है कि निकाह बिल्कुल सादा हो उसमें हरगिज़ कोई ख़र्चा न हो। लेकिन बाप के तर्के और विरासत से बेटियों को हिस्सा

Scanned by CamScanner

दिया और दिलाया जाए। हमें आजकल के अक्सर मुसलमान से यह उम्मीद नहीं कि वह इस पर अमल करेंगे लेकिन य सोच कर मैं लिख रहा हूँ कि शायद ख़ुदाए तआ़ला आइन्द ज़माने में ऐसे लोग पैदा फ़रमा दे। जिनका हर क़ौल व फ़े इस्लाम का नमूना हो और वह दुनिया को दिखायें कि इस्ला क्या है और ऐसा हो जाए तो यह जो ग़ैर मुस्लिम हैं य भी मुसलमान हो जायेंगे। आप ख़ुद सोचिये कि बेटियों व हिस्सा शादी के वक़्त खिला पिला कर और फ़ालतू सामा देकर उड़ा दिया जाए और बेटों का हिस्सा बाक़ी रखा जाए यह बेवक़ूफ़ी और नाइन्साफ़ी नहीं है तो और क्या है।

ज़रूरत हिम्मत की

माहौल में तब्दीली लाने और बिगड़े हुए मुआ़शरे व सुधारने के लिए बड़ी हिम्मत व जवांमर्दी की ज़रूरत हो है जो लोग यह कहते हैं कि दौर ही ऐसा है। माहौल ऐसा है। सब ऐसा कर रहे हैं हम कैसे बचें सब से अल कैसे चलें। ऐसे लोग दुनिया में कभी न कुछ कर सके न कर सकेंगे। दुनिया में इन्क़िलाब व तब्दीली वही लो लाते हैं और माहौल में इस्लाह व सुधार वही लोग क हैं जो यह नहीं देखते कि लोग क्या कर रहे हैं बल्कि व यह देखते हैं कि सही क्या है और हमें वह करना है सही है चाहे ज़माना कुछ भी कहे और ऐसे ही लोग नामव कमाते हैं और तारीख़ में उनके चर्चे रहते हैं। शुरू में लो उन्हें पागल और दीवाना कहते हैं। बुरा भला बकते अ गालियाँ देते हैं। लेकिन बाद में वही उनको दुआयें दे उनकी तारीफ़ें करते उनके आशिक़, चाहने वाले और दीवा हो जाते हैं। यह जिनके मज़ारों पर भीड़ लगी है और जिन चर्चे तज़करे गली गली हैं यह सब वही लोग हैं जिन्हों ज़िन्दगी में ज़ुल्म सहे हैं गालियाँ खाई हैं और उन्हें पाग दीवाना कहा गया है मगर उन्होंने वही कहा और वही कि है जिससे अल्लाह राज़ी है और उसका रसूल।

लड़के और लड़कों वाले आगे बढ़ें

आज के दौर में लड़की वालों के लिए तो बड़ी मजबूरियाँ हैं लेकिन नौजवान लड़के और उनके घर वाले हिम्मत से काम लेते हुए माहौल को बदलने के लिए और जलती हुई आग को बुझाने के लिए आगे बढ़ें मैदान में उतरें और शरीफ़ों की शरीफ़ बेटियों से एक दम सादा निकाह करने के लिए तय्यार हो जायें और साफ़ कह दें कि हमें कुछ नहीं चाहिए बल्कि वह अगर माहौल व हालात की वजह से या अपनी शान व शेख़ी दिखाने के लिए तय्यार हों भी तो सख़्ती से मना करें बल्कि मांगों और डिमान्डों की जगह उल्टी शर्त यह लगायें कि हम आपकी बेटी से शादी तभी करेंगे जब निकाह बिल्कुल सादा हो न मंगनी न सगाई न रस्मो रिवाज न बारात न लेने न देने। हाँ जहेज़ के तौर पर कुछ ज़रूरी घरेलू चीज़ें, पलंग, पीढ़ी, दो एक बिस्तर खाने पीने के दो चार बरतन हों तो कुछ हरज नहीं लेकिन यह भी उसी के लिए जिनके बस की बात हो और वह मांग कर या शर्त लगा कर न हो।

जो कुछ देना है अपनी बेटी को दो

आजकल चूँकि आमतौर से बेटों को बाप की जाएदाद से हिस्सा न देने का ग़लत रिवाज पड़ गया है लिहाज़ा शादी के मौक़े या पहले या बाद में कोई बाप अपनी बेटी को नक़द या जाएदाद की शक्ल में कुछ दे दे तो कोई हरज नहीं लेकिन निकाह व शादी में ख़र्चे। न करना बेहतर है और शौहर और उसके घर वालों को चाहिए कि साफ़ कह दें कि आप को कुछ देना है तो अपनी लड़की को दीजिये।

Scanned by CamScanner

आप जानें आपकी लड़की और घर वालों की तरफ़ से बेटी को जो कुछ मिले उस पर दबाव बना कर मजबूर करके ज़बरदस्ती उससे शौहर या उसके घर वालों को कुछ लेना ज़ुल्म व हराम है। बल्कि उन्हें चाहिए कि उससे बजाए लेने के उसको महर की रक़म दें और दोनों तरफ़ से लड़की की मज़बूती की जाए और वक़्त ज़रूरत यह रक़म या जाएदाद उसके काम आयें जो शौहर औरत की फ़ितरी कमज़ोरी से फ़ाइदे उठाते हैं और उसे मजबूर करके ज़ुल्मन उसकी अपनी मिल्कियत पर क़ब्ज़े जमाते हैं या उनसे ज़बरदस्ती कमाई के लिए काम धन्धे कराते हैं यह सब काहिल, आराम तलब, निकम्मे, निखट्टू, ज़ालिम व हरामख़ोर हैं। अल्लाह तआला ने उनके लिए जहन्नम तय्यार कर रखी है।

बाज़ घरों में देखा कि लड़कियाँ अपनी शादी के लिए ख़ुद कमा कमा कर काम धन्धे करके दौलत जमा करती हैं ताकि उससे बारात का ख़र्चा पूरा हो और जहेज़ वग़ैरा की तय्यारियाँ हो। मैं कहता हूँ अगर वह कुछ कमा रही हैं तो उनकी कमाई को बारातियों की खिलाई और जहेज़ की फ़ालतू चीज़ों की ख़रीदारी में क्यूँ बरबाद करते हो। निकाह सादा करो और उनकी कमाई उनके पास रहने दो ताकि वक़्ते ज़रूरत वह उसके काम आए और जब वह तुम्हारी बीवी होगी और उसके पास कुछ होगा तो हरज मरज़, बीमारी मुसीबत में वह तुम्हारे या तुम्हारे बच्चों के काम में आ सकता है। उसकी मज़बूती तुम्हारी मज़बूती है। वफ़ादार बीवी यह कब गवारा करेगी कि आप भूके हों और वह खाना खाए। तो उसकी कमाई को बारात ले जा कर बरबाद करो बे वजह के यार दोस्तों को एक दिन में खिला पिला कर और फ़ालतू बेज़रूरत के सामान बतौरे जहेज़ ख़रिदवा कर क्यूँ उड़ाए और छिनवाए देते हो उसका उसके पास रहने दो वह वक़्त पर तुम्हारा ही होगा।

मांग और डिमान्ड हराम है

आज लड़के और उनके घर वाले जो लड़की वालों से तरह तरह की मांगें करते हैं और डिमान्डें उनके सामने रखते हैं कि उस वक़्त इतना और उस वक़्त उतना चाहिए। कभी मंगनी, सगाई और तारीख़ तय करने के बहाने, कभी जोड़ा पहनाने और त्योहारी की आड़ लेकर यह सामान चाहिए। ऐसा ऐसा खाना और नाश्ता चाहिए तब निकाह होगा तभी हम आपकी बेटी से रिश्ता करेंगे यह सब रिश्वत और हराम है और लेना, खाना सब हराम है। जैसे सुअर और मुरदार, शराब और सूद क्यूँकि यह रिश्वत है। और रिश्वत इस्लाम में सख़्त हराम है। हदीसे पाक में अल्लाह के रसूल ﷺ ने रिश्वत लेने वाले को जहन्नमी फ़रमाया और यह उसका फ़रमान है कि जिसके मुँह से निकली बात न कभी ग़लत होती है न होगी। जिसकी बात ख़ुदा की बात है। और लड़की वालों से ज़बरदस्ती दबाव बना कर मांग मांग कर अपने घरों को भरने वालो मांगी हुई मोटर साइकिलों और कारों पर बैठने वालो कभी आग की चिंगारी थोड़ी देर के लिए हाथ पर रख कर देखो कितनी तकलीफ़ होती है। फिर जहन्नम की आग में जलोगे तो कैसे झेलोगे। याद रखो अल्लाह की मार कड़ी है और उससे बच कर कोई निकला हो तो हमें बताओ। मौत की कलाई किसी ने थामी हो तो हमें बताओ। मौत से पंजा छुड़ा कर कोई भागा हो तो ऐसी कोई मिसाल लाओ। तुम ज़ालिम व जफ़ाकार हो गए। तुम मुसलमान कहलाते हो तुम हरामख़ोर और हरामकार हो गए। तुम आपस में एक दूसरे का ख़ून पीने लगे। तुम बेरहम संगदिल भेड़िये बन गए। जल्दी होश में आओ आँखें खोलो। उससे क्या फ़ाइदा कि फिर मौत तुम्हारी आँखें खोले और क़ब्र में तुमको होश आए।

Scanned by CamScanner

सुनो तुम्हारा परवरदिगार क्या फ़रमाता है :

"जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्होंने यह समझ रखा है कि वह हम से बाहर निकल जायेंगे।"

(क़ुर्आन, सूरए अनकबूत, रुकू ।)

यह शादी है या फिरौती

अब तो यह भी हो रहा है कि शादी के बाद बीवी को मजबूर करते हैं। यहाँ तक कि बाज़ ज़ालिम अत्याचारी उसको मारे पीटते हैं कि अपने बाप भाईयों से इतनी इतनी रक़म ले कर आओ और इन मुतालबों की ख़ातिर आग में जला कर मार डालने और क़त्ल करने के वाक़िआत भी अब रोज़ाना के मामूल हैं। मैं कहता हूँ यह अल्लाह की ढील से। कितना फ़ाइदा उठा रहे हैं। जो सज बन दुल्हन बन कर तेरे लिए आई तुझको इनसान और शौहर समझ कर ख़ुद को तेरे सुपुर्द कर दिया। अपना सब कुछ तुझ पर क़ुर्बान कर दिया। मगर तू कुत्ते से ज़्यादा लालची और नियत ख़राब, भेड़िये से ज़्यादा बेरहम संगदिल और काले नाग से ज़्यादा डसने वाला ज़हरीला निकला। भेड़िये और नाग भी अपने जोड़ों पर ज़ुल्म नहीं करते और तू अपनी शरीके ज़िन्दगी बीवी ही के लिए बेरहम बन गया। याद रखो जो आग तूने लगाई है उसमें तुझे ख़ुद ही जलना पड़ सकता है। तू भी बेटी और बहन वाला हो सकता है। और जहन्नम की आग तो तेरे ही जैसे लोगों के लिए तय्यार की गई है।

अपना घर छोड़ना आसान काम नहीं

इन्सान जिस माहौल और जिन लोगों में पैदा होता, पलता, बढ़ता है मरते दम तक उसकी महब्बत उससे नहीं जाती है। हम ने देखा है और तजरबा किया है कि बाहर कितना ही आराम व सुकून लोग दे दें लेकिन अपने वतन

की याद सताती है। चार दिन बाहर काटना मुश्किल होता है। घर भागने की हर शख़्स को जल्दी होती है। लेकिन यह बेचारी औरत है जो अपने माँ बाप, भाई बहन, घर मुहल्ले, सहेलियों और वतन को छोड़ कर शौहर के घर को अपना घर उसके मुहल्ले को अपना मुहल्ला उकी बस्ती को अपनी बस्ती, उसके घर वालों को अपने घर वाले बना लेती है। और तुम चन्द दिन की दुनिया, रुपये पैसे और मोटर साइकिलों, मारूतियों की ख़ातिर उसका दिल तोड़ते हो। उसको ताने देते हो। मारते पीटते हो। बान्दियों और नौकरानियों की तरह उससे काम लेते हो। उसे तंग और परेशान रखते हो। जो रो रो कर अपने घर से आई थी। तुम उसको यहाँ ला कर रुलाते हो। जिसने अपना सब कुछ तुम्हारी ख़ातिर छोड़ दिया। तुम भी उसके नहीं बन पाते हो। जिसने अपना घर छोड़ कर तुम्हारा दर आबाद किया। तुम्हारे घर में उसे ताने दिये जा रहे हैं। अब बताओ वह कहाँ की रही। और तुम से बड़ा ज़ालिम कौन है कि उसने अपना सब कुछ तुम पर क़ुर्बान कर दिया और तुम्हारी नज़र उस पर नहीं बल्कि माल व दौलत पर है। दुनिया के साज़ो सामान पर है। बताओ यह दुनिया कब तक रहेगी और तुम उसे क्या सब दिन बरत पाओगे। और बताओ क्या महब्बत से बड़ी कोई और दौलत है। इसी लिए इस्लाम के अज़ीम पैग़म्बर ने फ़रमाया :

"तुम में सब से बेहतर वह लोग हैं जो अपने बीवी बच्चों के हक़ में बेहतर हैं और मैं तुम में अपने घर वालों के लिए सब से ज़्यादा बेहतर हूँ।"

और ख़ूब जान लो जिसके दिल में महब्बत नहीं रहम नहीं दूसरे को दुखी करके सुख हासिल करे दूसरे को बरबाद करके आबाद होना चाहे अपने आराम के लिए दूसरों को परेशान करे। अपना घर भरने के लिए दूसरे के घर को वीरान करे। वह सही मअ़ना में इन्सान और मुसलमान नहीं है।

Scanned by CamScanner

लड़की देना एहसान है

आज अजीब उल्टा दौर आ गया है कि अगर कोई किसी की बेटी से शादी करता है तो वह ख़ुद और उसके घर वाले यह समझते हैं कि हमने उन पर और उनकी लड़की पर बड़ा एहसान कर दिया और उनको तरह तरह से दबाते नखरे और ठस्से दिखाते हैं और वह भी ख़ूब उनसे दबते और उनके नखरे ठस्से देखते हैं। और यह कहा जाता है कि अरे भाई लड़की वाले को तो दबना ही पड़ता है। हालांकि एहसान तो उसने किया है कि जिसने नाज़ व नेअ़म, लाड़ व प्यार से पाल कर अपनी बेटी दुल्हन बना कर आपके हवाले कर दी। यह उल्टी मत है कि लड़की वाले को दबना पड़ता है। बात यह है कि वह दबता है क्यूँकि आप ज़ालिम और बेरहम हो गए हैं। बजाए इन्सान के शैतान हो गए हैं। अगर आप इन्सान हैं तो आपको उसका एहसान मानना चाहिए कि उसने अपनी बेटी लख़ते जिगर दिल का टुकड़ा आपको दे दिया। आप उसका जितना एहसान मानें वह कम है।

इस दौर का मर्द मुजाहिद

आज के माहौल में अगर कोई किसी की बेटी से एक दम सादा निकाह करे और उसका किसी क़िस्म का कोई ख़र्चा न होने दे तो वह मर्द मुजाहिद है और उको सौ शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा जैसा कि फ़रमाने रसूल है कि

"जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करे जब कि वह सुन्नत मिट चुकी हो तो उसको सौ शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा"

अब अगर बाप के मरने के बाद उसके भाई तुम्हारी बीवी को बाप के तर्के से हिस्सा नहीं देते तो वह हराम दबाने वाले गुनहगार होंगे। उसका गुनाह उन पर होगा और

तुम को उससे क्या मतलब भाई जानें और उनकी बहन वह तेरा नहीं मारा गया बल्कि वह तो उन्होंने अपनी बहन की हक़तल्फ़ी की है। तेरा तो सुन्नते मुस्तफ़ा के मुताबिक़ निकाह करने पर सौ शहीदों का सवाब पक्का है अल्लाह का वादा सच्चा है उसको कोई काट नहीं सकेगा और अल्लाह के करम से उम्मीद है कि वह दुनिया में भी तेरा घर भर देगा और तुझे तंग व परेशान नहीं होने देगा। रसूले पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है "रहम करो आसमान वाले तुम पर रहम करेंगे" और ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने निकाह करने वालों को बशारत सुनाई है :

"अगर तुम्हें मुहताजी का डर है तो अन्क़रीब अल्लाह तुम्हें मालदार करेगा।"

दीनदार समझदार लोग आपस में रिश्तेदारियाँ करें

ब्याह शादियों के आसमान छूने वाले ख़र्चों को रोकने और उस जलती और फैलती आग को बुझाने के लिए भले दीनदार सूझ बुझ वाले और समझदार लोग आपस में रिश्तेदारियाँ करें। परेशानी और उलझन तभी सामने आती है जब दोनों तरफ़ के या किसी एक तरफ़ का जाहिल दुनियादार और गंवार हो लेकिन दोनों तरफ़ के लोग समझदार, दीनदार हो तो फिर बिल्कुल सादा निकाह करने में दिक़्क़त क्यूँ है? अब किसी को समझाने की क्या ज़रूरत है? मेरी राय में तो एक दम बिल्कुल बेख़र्चे के सादा निकाह हों ताकि दुनिया के सामने इसलाम का सही नमूना आए और रसूले पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इस फ़रमान पर पूरे तौर पर अमल हो जिसको हम पहले नक़्ल कर चुके हैं कि जिस निकाह में जितना ख़र्च कम होगा उतनी ही ख़ैर व बरकत होगी?

मैं कहता हूँ कहाँ हैं यह हाजी और नमाज़ी यह दाढ़ियाँ और टोपियों वाले, यह कुर्ते और पाजामे वाले, यह मौलवी

Scanned by CamScanner

और आलिम, यह इमाम और मुअज़्ज़िन यह इस्लामी दावते देने वाले नमाज़ और रोज़े और सुन्नतों की तबलीग़ व इशाअत करने वाले। जब ख़ुदाए तआ़ला ने तुमको इन सब कामों की तौफ़ीक़ दी है तो ब्याह शादी के बढ़ते हुए इन ख़र्चों की आग को बुझाने के लिए तुम आगे बढ़ो और इस्लामी मिज़ाज से दुनिया को अपने किरदार के ज़रिए रूशनास कराओ, आपस में रिश्तेदारियाँ करो और एक दम सादा निकाह करने का रिवाज बनाओ छोड़ो बिरादरी वाद कुन्बा परवरी और क़बीला परस्ती को। सब भले और दीनदार एक बिरादरी एक क़बीला एक कुन्बा और एक ख़ानदान बन जाओ। अगर आप दौलतमन्द और मालदार भी हैं तो दौलत को ख़ुदारा किसी और मौक़े के लिए रहने दो निकाह व शादी के वक़्त तो एक दम सादा मिज़ाज और ग़रीब बन जाओ कि दुनिया को राहत मिल सके और रहमते आलम की रहमत का बादल हर जंगल झाले छत आंगन और कोठे पर बरस जाए। ख़्याल रहे कि अगर यह ब्याह शादी के ख़र्चे नहीं रोके गए और यह ऐसे ही बढ़ते रहे तो आने वाले वक़्त में निकाहों की शरह घट जाएगी निकाह कम होंगे और जब निकाह कम होंगे तो बदकारियाँ ज़्यादा होंगी और दीनदारी ढकोसला और दिखावा बन कर रह जाएगी ऊपर से हाजी नमाज़ी और दाढ़ी वाले होंगे और अन्दर से शैतान। कभी मौलवी साहब की लड़की भगेगी और कभी इमाम साहब का लड़का ज़िना में पकड़ा जाएगा और हाजी साहब जो नमाज़ी भी हैं और दाढ़ी वाले भी यह किसी बेवा औरत के घर अकेले में देखे जायेंगे। मुबल्लिग़ साहब और अमीरे जमाअत के लिए अपनी इज़्ज़त बचाना नामुमकिन हो जाएगा और तबलीग़ें तहरीकें तन्ज़ीमें सब धरी रह जायेंगी। जब लड़के और लड़कियाँ जवान हो जायें तोअब इन्तेज़ार मत करो चुपचाप ख़ामोशी से इज़्ज़त के साथ उनके निकाह कर दो न ख़र्च करो न कराओ ख़ुद भी परेशान न हो और दूसरे को भी परेशान न करो।

घरों में औरतों की हुकूमत ख़तरनाक है

ब्याह शादी और दीगर मुआमलात व रुसूम व रिवाज में जो फ़ुज़ूलख़र्चियाँ हो रही हैं, उनमें बड़ा दख़ल औरतों की हुकूमत का है। औरतें उमूमन कमअक़्ल होती हैं और अन्जाम और नताइज से बेख़बर। मर्द समझदार चाहता है कि फ़ुज़ूलख़र्ची न हो और बेज़रूरत सामान न ख़रीदा आए लेकिन औरतें उसकी नाक में दम कर देती हैं और दूसरों की मिसालें उसको सुनाती हैं कि फ़लाँ ने यह किया उस ने यह किया उस ने यह दिया तुम भी ऐसा ही करो अरे जब इतना हुआ है तो इतना और सही ऐसी बातें कर करके उसको मुसीबत में डाल देती हैं और उस पर क़र्ज़ करा देती हैं और फिर यह तो ख़ूब मस्ताती है वह कमाते कमाते मराजा रहा है। बीमार तबीयत ख़राब है फिर भी काम करने जा रहा है क्यूँकि क़र्ज़ सवार है।

भाइयों इस्लामी मिज़ाज यह है कि घर में औरत को शौहर की महब्बत मिले उसको नान नफ़्क़ा रोटी पानी ज़रूरी ख़र्चे मिलें और उस पर ज़ुल्म न किया जाए लेकिन हुकूमत शौहर की ही होना चाहिए। जो लोग औरतों बच्चों की हर बात मानते हैं, हर ख़्वाहिश हर ज़िद पूरी करते हैं वह दुखी परेशान और ज़लील व ख़्वार रहते हैं और जो औरतों को सताते हैं उन पर ज़ुल्म करते हैं वह भी।

इख़राजात की ज़्यादती दीनदारी के लिए ज़हर है

फ़ुज़ूलख़र्ची और इख़राजात की ज़्यादती ने आज लोगों को दीन से दूर कर दिया है कमाते कमाते परेशान हैं न जिस्म को फ़ुरसत है न दिमाग़ को। फिर नमाज़ कैसे पढ़ें ख़ुदा की याद कैसे करें। सौ में से 99 से भी ज़्यादा लोग

Scanned by CamScanner

बेईमान ख़ाएन और नीयत ख़राब हो गए हैं। पराया पैसा लेकर न देना हेराफेरी रिश्वतख़ोरी सब आज के दौर में फ़ुज़ूलख़र्चियों की देन है। आज कम ही लोग ऐसे हैं जो सिर्फ़ रोटी और कपड़े के लिए परेशान हैं और उसके लिए कमा रहे हैं। सब शौक़ अरमान और फ़ैशन और ब्याह शादियों के लिए बंगू बने घूम रहे हैं। साइंस की इजादात ने इन्सान की गिरहस्ती और उसकी ज़रूरतों को बढ़ा दिया है और जो सिर्फ़ दो रोटी एक जोड़े कपड़े और एक कच्ची छत का मुहताज था वह अब क़दम क़दम पर हज़ार ख़र्चों को मुहताज हो गया ख़ुलासा यह है कि फ़ालतू ख़र्चों और फ़ुज़ूलख़र्चियों पर कन्ट्रोल किए बग़ैर आज के दौर के इन्सान को दीनदार नमाज़ी भला और इमानदार बनाना क़रीब नामुमकिन है और नश्र व इशाअत और तबलीग़े दीन की तमाम तहरीकें बेकार हैं। जब तक बेजा इख़राजात पर कन्ट्रोल करके इन्सान को सादगी पसन्द न बनाया जाए और माहौल व मुआशरे और समाज के रस्म व रिवाज की फ़ुज़ूलख़र्चियों में जकड़े हुए और ग़ैरज़रूरी इख़राजात के बन्धनों मे बंधे हुए इन्सान को इनसे बाहर न निकाला जाए। आप उसे दीन की बातें समझा रहे हैं और वह कमाने की फ़िक्र में पागल बना घूम रहा है। उसने छह-छह काम छेड़ रखे हैं क्यूँकि सिर्फ़ एक काम से उसका पूरा नहीं हो रहा है।

एक ज़रूरी नोट

यह किताब उर्दू ज़बान में छप चुकी है। उर्दू जानने वाले उर्दू वाला नुस्ख़ा हासिल करके पढें। दीनी इस्लामी किताबें पढ़ने का जो मज़ा उर्दू में है वह हिन्दी में नहीं। सिर्फ़ आधे घन्टे के लिए मग़रिब की नमाज़ के बाद किसी पढ़े लिखे आदमी के पास बैठ कर पढ़ना शुरू कर दें तो साल छह महीने में आप क़ुर्आन शरीफ़ और उर्दू पढ़ना सीख लेंगे।

ब्याह शादियों के इख़राजात पर कन्ट्रोल लड़कियों की शादी में मदद करने से नहीं होगा

कुछ लोग किसी की लड़की की शादी में ख़र्च कर देते हैं या पूरी शादी अपने पास से करा देते हैं और दान जहेज़ बारात के खाने खिलाने में इसकी मदद करते हैं। मैं कहता हूँ कि इस तरह भी इस आग को बुझाया नहीं जा सकता। ब्याह शादी के बढ़ते हुए ख़र्चों पर कन्ट्रोल तभी होगा जब आप अपनी या अपने बेटे भाई की शादी बिल्कुल सादा तौर पर करें जिसमें हरगिज़ ख़र्चा न हो और दूसरों को भी इसकी तरग़ीब दिलायें।

आप किसी लड़की की शादी में मदद कर दें, भीक और चन्दे दे दें और दिलवा दें इस सबसे वक़्ती तौर पर उस घर को सूकून मिल सकता है लेकिन आप कितनी शादियाँ करा देंगे और कब तक कराते रहेंगे। आग तो तभी बुझेगी जब माहौल में तबदीली आएगी एक दम सादा निकाहों का रिवाज क़ाइम होगा। बेहतर यही है और सबसे बड़ी मदद यही है कि आप का किसी ग़रीब लड़की से अगर रिश्ता शरअन मुनासिब हो तो ख़ुद निकाह करें या अपने बेटे भाई भतीजे अज़ीज़ व दोस्त का करा दें और यह निकाह बिल्कुल सादा बेख़र्चे का हो ख़्याल रहे कि दुनिया का अमन व सुकून चैन व आराम अल्लाह तआला ने उस नबी के तौर तरीक़ों और दामने करम में रखा है। जिसको उसने सारे जहानों की रहमत बना कर भेजा। आप ख़ुद तो कम से कम दो लाख रुपये शादी में ख़र्च करने वाले दौलतमन्द की बेटी की तलाश में बूढ़े हो चले हैं और दूसरी ग़रीबों की लड़कियों की शादी में मदद फ़रमा रहे हैं यह इसलामी मिज़ाज नहीं है।

Scanned by CamScanner

लड़के भी तुम्हारे लड़कियाँ भी तुम्हारी फिर शादियों के लिए क्यूँ परेशान रहते हो

चचा की, ताया की, मामू की, फूफी की, ख़ाला की बेटे से निकाह जाइज़ है। यह रिश्ते ऐसे हैं कि सब आपस क मुआमला है गोया कि जिन के लड़के हैं उन्हीं की लड़कियाँ फिर शादियों के लिए क्यूँ परेशान हो। आपस में निकाह क नहीं करते एक दूसरे को क्यूँ नहीं निबाहते, क्यूँ शादियों लिए कमाते कमाते मरे जा रहे हो। बात यह है कि तुम एक दूसरे से सच्ची महब्बत नहीं रह गई है और हमदर्दि सिर्फ़ ज़बानी ख़र्च तक हैं। यह कैसी हमदर्दी आपसदारी कि आपके मुहल्ले ख़ानदान में कोई लड़की वाला रिश्ते लिए परेशान है और आपसे उसका रिश्ता शरअन सही और आप किसी करोड़पती की बेटी ढूंढ रहे हैं। गोया कि आप शादी करने नहीं चले हैं बल्कि शादी के नाम प कमाई करने चले हैं और वह आपकी नियत और दिल के इरादों को ख़ूब देख रहा है कि जिस की पकड़ से कोई निकल नहीं सकता और आपस में एक दूसरे की बहन से निकाह करना भी जाइज़ है जिसमें कोई ख़राबी नहीं। ब्याह शादी के इख़राजात से बचने की यह भी एक सूरत है।

लड़की वालों से दो बातें

बाज़ बाज़ लड़की वालों के दिमाग़ भी बहुत ख़राब हैं बल्कि कुछ लोग तो यह कहते हैं कि माहौल के बिगाड़ने में लड़की वालों का हाथ ज़्यादा है और ख़ूब दे दे कर इन्होंने मुआशरे को तबाह किया है। इधर उधर से कमा कर तेरा मेरा दबा कर सूद लेकर दौलत जमा कर ली। फिर लड़की की शादी में ख़ूब शान शेख़ी दिखाई जा रही है। गली में जहेज़ सजा कर उसकी नुमाइश करके फूले नहीं समा रहे

हैं। मैंने यह दिया मैंने वह दिया यह फ़लाँ फ़लाँ सामान जो किसी ने नहीं दिया था वह मैंने दिया। यह शान शेख़ी दिखाना यह जहेज़ की नुमाइश करना यह नई नई चीज़ें देनेका रिवाज बनाना। यह अल्लाह व रसूल को भूल जाना नहीं है तो और क्या है और माहौल में आग लगाने वाले ग़रीबों को जलाने वाले ख़ुदा से डर कहीं कभी तुझ को भी न जलना पड़े।

ज़्यादा देने वाले ज़्यादा परेशान

मेरी नज़र में ऐसे कई वाक़ियात हैं कि जिन लोगों नेख़ूब हस्ती मिटा कर दिया, ख़ूब शान शेख़ी दिखाई नए नए सामान जो किसी ने नहीं दिए थे वह देकर माहौल को बिगाड़ा उनकी बेटियाँ ज़्यादा दुखी हैं। मुक़दमे झगड़े और तलाक़ों की नौबत आई या बान्दियों नौकरानियों की सी ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं और बहुत सी वह बेटियाँ जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी लेकर नहीं गईं निहायत चैन व सुकून से सुसराल में ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं।

लड़के वालों की मांगें पूरी मत करो

हिम्मत से काम लो, जो क़िस्मत में लिखा है वह होगा लड़के वालों की मांगें और डिमांडें पूरी मत करो। अल्लाह ने आपकी बेटी की क़िस्मत में चैन लिखा है तो वह कोई काट नहीं सकेगा और ख़ुदा न करे अगर दुनिया के दुख उसको अगर पहुँचना हैं तो लेने देने से टल नहीं सकते। मैंने देखा है कि हर मांग व मुतालबा पूरा करने से और भी ज़्यादा दिमाग़ ख़राब हो जाते हैं और फिर वह सब दिन दुहते ही रहते हैं और जो कुत्ते हैं उनके पेट न कभी भरे हैं न कभी भरेंगे। हिम्मत करके एक बार झिड़क दिया जाए और यह झिड़कने का माहौल बन जाए तो फिर इन मांगे

Scanned by CamScanner

और मुतालबे रखने वालों को अक़्ल आ जाए। अक़्लमन्दों ने कहा है कि ज़ुल्म सहना और ख़ामोश रहना भी ज़ुल्म को बढ़ावा देना है। शेर जब एक मरतबा किसी इन्सान का गोश्त खा लेता है तो फिर वह आदमख़ोर हो जाता है। जो देना है वह दो जो खिलाना है वह खिलाओ, निकाह के लिए आना और फिर बारातियों को वापस ले जाना उनके लिए भी आसान नहीं है और बेटियों को सुकून व चैन देने लेने से नहीं बल्कि अल्लाह के देने से मिलता है।

देने और मुँह भरने से कमीने शरीफ़ नहीं हो सकते

जो आदमी जैसा है और जैसी उसकी फ़ितरत वह वैसा ही रहता है। आप उसकी कितनी ही ख़्वाहिशात पूरी कर दें जो बेरहम ज़ालिम और संगदिल भेड़िया है वह भेड़िया ही रहेगा आप उसको कितनी ही बकरियाँ खिला दें। उसको तो ज़ुल्म करना है ख़्वाह आप कितने ही मांगें और मुतालबे पूरी कर दें और जो भले शरीफ़ लोग हैं उनको कोई कुछ भी न दे वह ज़ुल्म करना चाहें तो भी ज़ुल्म नहीं कर सकते वह किसी को सताना चाहें भी तो उनके बस की बात नहीं है। ख़ुलासा यह है कि इनामात व बख़्शिश देना लेना ही सब कुछ नहीं बल्कि इन्सान की फ़ितरत का भी मुआमलात में बहुत बड़ा दख़ल है बल्कि यही अस्ल चीज़ है। देखी भाली बात है कि मियाँ बीवी में जब महब्बत पैदा हो जाती है तो फिर उसको कोई काट नहीं पाता। माँ बाप और भाई बहन तक उस महब्बत और लगाव में आड़ और रुकावट नहीं बन पाते। कहाँ का सामान जहेज़ व कपड़े और जोड़े रुपया और पैसा और क्यूँ न हो कि सारे सच्चों के सरदार कायनात के

मुख़्तार इस्लाम के पैग़म्बर हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं :

"निकाह के ज़रिए जो महब्बत पैदा होती है उसकी मिसाल नहीं।" (मिश्कात सफ़ा 248)

और जो मर्द है और उसको ज़िन्दगी गुज़ारने और फ़ितरी तक़ाज़े पूरा करने के लिए औरत की ज़रूरत है उसको औरत मिल जाना ही काफ़ी होता है और उसको उससे कुदरती तौर पर महब्बत पैदा हो जाती है और वह उसकी आंखों की ठंडक और दिल का सुकून बन जाती है। फिर उसकी नज़र माल व दौलत, जोड़ों, मोटर साइकिलों और कारों पर नहीं होती। मर्द के लिए तो औरत ही बहुत है और यह लोग जिनकी नज़र औरत या बीवी पर नहीं बल्कि माल व दौलत पर है सामान जहेज़ पर है, निकाह के बाद भी औरतों को मार मार कर माइके माल व सामान लेने भेजते हैं। मुझको तो यह सब नामर्द मालूम होते हैं और आजकल जो बचपन ही से बच्चों को फ़िल्मों के नाम पर नंगे फ़ोटो और गंदी तस्वीरें दिखाई जा रही हैं, बेहयाई वाले गाने सुनवाए जा रहे हैं उन्होंने एक बड़ी तादाद नौजवानों में नामर्दों की पैदा कर दी है। अब जो नामर्द हैं उन्हें बीवी से क्या मतलब शादी का बहाना है दौलत कमाना है। सही बात यह है कि इस दौर को हर एतेबार से इस्लाम की ज़रूरत है ख़ुदा तआ़ला ऐसे बन्दे पैदा फ़रमाए जो उसका दीन क़ाइम करें।

तो बात यही है कि लेने देने और मुँह भरने से कमीने और ज़लील, शरीफ़ और भले आदमी नहीं बन सकते और नामर्द मर्द नहीं हो सकते। लिहाज़ा जो करना है वह कीजिए जो क़िस्मत में लिखा है वह तो होना है। ख़ुदाए तआ़ला हर बेटी को शरीफ़ शौहर अता फ़रमाए। आमीन!

Scanned by CamScanner

क्या जहेज़ देना सुन्नत है

हम यह ज़िक्र कर चुके हैं कि इस्लाम में लड़के औरउसके घर वालों पर निकाह से पहले या बाद में हरगिज़ कोई ख़र्चा शरअन लाज़िम व ज़रूरी नहीं है बल्कि बीवी के शौहर की तरफ़ से महर मिलना चाहिए। और बाप के मरने पर उसकी जाएदाद से हिस्सा और यह दोनों चीज़ें ख़ालिस लड़की की मिल्कियत हैं। अल्बत्ता जहेज़ देना सुन्नत कहा गया है और बेशक वह सुन्नत है लेकिन ऐसी सुन्नत नहीं कि उस पर अगर अमल न किया जाए तो कोई गुनाह हो जाएगा और महर देना फ़र्ज़ है कभी न देना हराम। यहाँ तक कि अगर बग़ैर दिए मर गया तो उसके छोड़े हुए माल जाएदाद से औरत को दिया जाए। यूंही जो बाप के तर्क से बहनों का हिस्सा ख़ुद दबा कर बैठ जाते हैं यह भी हराम करते हैं और हराम खाते हैं मगर अफ़सोस किइस हिस्से और महर का कोई ज़िक्र भी नहीं आता। जहेज़ की रस्म ने आसमान को छू लिया है और उसके नाम पर लूट खसोट मची हुई है और उसको सुन्नत बताने वालों से मेरी गुज़ारिश है कि जहेज़ को सुन्नत कहने से पहले आप आज के दौर में कुछ सोच समझ लें और आगे पीछे कुछ और भी बता दें क्यूँकि आज के दौर में जहेज़ एक क़िस्म की डकैती लुटाई छीन झपट और लड़की वालों की मजबूरी से फ़ायदा उठाने का नाम बन गया है। ज़रा होश में बोलिए कहीं लोग इस लूट मार को रहमतुल्लिल आलमीन की सुन्नत न समझ लें। हाँ बेशक सुन्नत है इस सुन्नत की हक़ीक़त क्या है इस सिलसिले में जो हदीस रिवायत की गई है उसका तर्जमा मुलाहिज़ा फ़रमाइये।

हज़रते अनस रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रते अबूबक्र और हज़रते उमर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने हुज़ूर को हज़रते फ़ातिमा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से निकाह का पैग़ाम दिया तो हुज़ूर ने उन्हें कोई

जवाब नही दिया तो उन लोगों ने हज़रते अली से फ़रमाया कि तुम फ़ातिमा से निकाह का पैग़ाम दो। हज़रते अली फ़रमाते हैं कि उन लोगों ने मुझ से एक ऐसी बात कही कि जिसकी तरफ़ अभी तक मेरा ध्यान नहीं गया था। मैं फ़ौरन हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह फ़ातिमा से मेरा निकाह फ़रमा दीजिए। हुज़र ने फ़रमाया तुम्हारे पास कुछ है मैंने कहा एक घोड़ा और एक ज़िरह (लोहे का एक लिबास जो जंग में हिफ़ाज़त के लिए पहना जाता है) हुज़र ने फ़रमाया घोड़ा तो तुम्हारे काम की चीज़ है लेकिन ज़िरह को बेच दो हज़रते अली फ़रमाते हैं मैंने चार सौ अस्सी दिरहम में ज़िरह बेच डाली और रक़म हुज़र की ख़िदमत में लाकर पेश कर दी। हुज़र ने उसमें से एक मुठ्ठी भर कर दिरहम लेकर हज़रते बिलाल को दिए और फ़रमाया इससे ख़ुशबू ख़रीद लाओ और सहाबा से फ़रमाया कि फ़ातिमा के लिए जहेज़ तैयार करें। तो उनके लिए एक बुनी हुई चारपाई और एक तकिया तैयार किया गया जिसमें खजूर के पत्ते भरे हुए थे। (मवाहिबे लदुन्नया, जिल्द 1, सफ़हा 384; फ़तावा रज़विया, जिल्द 5, सफ़ा 493)

ज़रक़ानी और सैरुस्सहाबियात की रिवायत से पता चलता है कि उसके साथ खजूर की छाल भरा एक गद्दा, एक छागल, एक मशक, दो चक्कियाँ और मिट्टी के दो घड़े भी थे।

और यह फ़ैसला करना भी मुश्किल है कि यह सामान हुज़ूर ने अपने पास से दिया था बल्कि अलफ़ाज़े हदीस से यह इशारा मिलता हैकि हज़रते अली रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जो ज़िरह बेची थी उसकी रक़म से यह सामान तैयार किया गया था।

इस सब का ख़ुलासा यह है कि ज़रूरियाते ज़िन्दगी की कुछ चीज़ें बवक़्ते रुख़्सत बेटी को घर वालों की तरफ़ से दे दी जायें तो कुछ हरज नहीं। हदियों और तोहफ़ों का लेन देन इस्लाम में पसन्द है मगर जो ज़ोर व दबाव बना कर

Scanned by CamScanner

मजबूरी से फ़ायदा उठा कर या रस्म व रिवाज की वजह से मजबूर होकर ज़रूरी समझ कर दिया लिया जाए उसको हदिया या तोहफ़ा या जहेज़ कहना या सुन्नत क़रार देना झूट फ़रेब धोका और मज़हबे इस्लाम को बदनाम करना है। कुत्ते को ऊपर से बकरी की खाल उढ़ा कर अगर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़ कर ज़िबह कर दिया जाए तो उसका गोश्त हलाल नही हो जाएगा।

आजकल जहेज़ के नाम पर जो कुछ हो रहा है और जो ग़ैर ज़रूरी फ़ालतू सामान दिए और लिए जा रहे हैं उसको सुन्नत कहने वाले पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा का यह फ़रमान भी मुलाहिज़ा फ़रमायें :

"दुनिया में ज़िन्दगी परदेसी या मुसाफ़िर की तरह गुज़ारो और ख़ुद को क़ब्र वालों में शुमारकरो।" (मिश्कात सफ़ा 450)

जो लड़कियों के रिश्ते के लिए परेशान हैं वहीं लड़कों के लिए मुँह फैलाए फिर रहे हैं

बहुत से लोग देखे जो अपनी लड़की के रिश्ते के लिए परे शान हैं और जो मिलता है उससे रिश्ता ढूंढने की बात करते हैं। मौलवियों पीरों से लड़कियों के रिश्ते के लिए दुआ तावीज़ कराते हैं। वही लोग अगर उनके पास शादी करने के लिए बेटा भी है और इसके लिए कोई ग़रीब व शरीफ़ आदमी अपनी शरीफ़ बेटी के रिश्ते की बात करता है तो रुक कर सीधे मुँह से बात ही नहीं करते और मुँह फैलाए फिर रहे हैं। मैं कहता हूँ कि अगर तुम्हारे पास बेटा भी है तो तुम उसकी शादी शरीफ़ व ग़रीब ज़ादी से बे ख़र्चा कराए सादा तौर पर क्यूँ नहीं करते फिर उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हारी बेटियों के लिए रहम दिल लोग

अपने करम से अता फ़रमा देगा। और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो तुम अपनी ही लगाई हुई आग में जल रहे हो। फिर दुआ व तावीज़ से क्या होना है? और अपने खोदे हुए कुएँ और गढ़े में ख़ुद ही गिर रहे हो। फिर गिले शिकवे क्यूँ करते हो।

यह ख़्याल भी ग़लत है कि जब तक लड़की की शादी न हो जाए लड़के की कैसे करें। लड़के की बाद में करेंगे। मैं कहता हूँ जो जवान है और जिसकी हो जाए उसकी करो सब लोग यह सोच लें और ऐसा करने लगें तो फिर न जवान लड़के रहेंगे न लड़की। सब निकाह वाले होंगे।

और माहौल को सुधारने की शुरूआत वही करते हैं जो हिम्मत वाले हों इसीलिए तो उन्हें सौ शहीदों का सवाब मिलेगा। और वह जिहाद का मरतबा पायेंगे। लड़का हो या लड़की हदीस में तो दोनों के लिए आया है रसूलल्लाह ने फ़रमाया है कि जब वह बालिग़ हो जायें और घर वाले उन का निकाह न करें। फिर अगर उनसे कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो गुनाह घर वालों पर है। दोनों हदीसें मिश्कात बाबुन्निकाह फ़िल वली सफ़हा 271 पर हैं मुलाहिज़ा फ़रमाइये और लड़के और लड़कियाँ जवान हैं। उनमें से जिसकी शादी होती हो कर डालिये यह मत सोचिये कि लड़के की तो हो ही जाएगी। पहले लड़कियों से निमट लें यह लड़कियों की शादियों को मुसीबत बना देना और उनकी शादी कर ली गोया जंग से निमट लिए यह सब काफ़िरों के मुआशरे और समाज की देन है। ख़ुदा इस्लाम वाले पैदा फ़रमाए।

एक ज़रूरी नोट

दीनी इस्लामी किताबों का अदब कीजिये। किताब के ऊपर कभी कोई घरेलू सामान मत रखिये। यह भी न हो कि आप ऊपर हों और क़रीब में किताब आपके नीचे। जिसके पास अदब है वह बे-पढ़ा होकर भी अच्छा है पढ़े लिखे बे-अदब से।

Scanned by CamScanner

क्या तुम्हारी बेटियाँ पैग़म्बरों और वलियों की बेटियों से ज़्यादा अहमियत वाली हैं?

आज अगर किसी लड़की वाले से कहा जाए कि अपनी बेटी को बग़ैर बारात लाए मामूली जहेज़ के साथ या बग़ैर जहेज़ के निकाह करके रुख़सत कर दो और कोई आदमी इस तरह उससे निकाह को राज़ी भी हो जाए। तो बुरा मान जाएगा। और औरतें मुँह बजायेंगी कि जनाज़े की तरह कैसे रुख़सत कर दें। लेकिन मैं पूछता हूँ यह हज़ारों अम्बिया किराम और औलिया इज़ाम की बेटियाँ जो इस तरह से निकाह करके रुख़सत कर दी गईं क्या तुम्हारी बेटियाँ उनसे ज़्यादा अहमियत मरतबे वाली हैं। उनकी बेटियों के चर्चे और शोहरे हैं। महफ़िलों मजलिसों और किताबों में उनके तज़करे हैं। उनकी नियाज़ें और फ़ातिहायें हो रही हैं और तुम्हारी बेटियों की जो नाक़द्री और बे इज़्ज़ती हो रही है वह पोशीदा और छुपी हुई नहीं है। घर वाले सालों मेहनत करके लाखों का जहेज़ सजा कर रुख़सत कर रहे हैं लेकिन सुसराल वालों की नज़र में नहीं आता। बूढ़ी सास मुँह बजा कर कहती है कि तेरे बाप ने दिया ही किया है? यह ताने देने वाली बूढ़ियां जो अपना घर बार सब कुछ छोड़ कर तुम्हारे घर आती है, उसका दिल दुखाने वाली सास और नन्दें उनके लिए अल्लाह ने जहन्नम तय्यार कर रखी है। इनके डंक बिच्छू से ज़्यादा तेज़ और ख़तरनाक होते हैं। क़ब्रों में उनकी ख़ूब पिटाइयाँ होंगी और यह क़ब्र से निकल कर भाग नहीं सकेंगी।

आज हाल यह है कि भीक मांगेगा, चन्दे करेगा तेरे मेरे सामने हाथ फैलाएगा। झूट बोलेगा, बेईमान बनेगा। लेकिन लड़की की शादी में शान शौख़ी ज़रूर दिखाएगा। उधर भीक मांगेगा इधर बातें मिलाएगा कि मैं ने अपनी लड़की को इतना दिया कि बड़े से बड़ा नहीं दे सकता। मैं कहता हूँ लड़की की शादी के लिए भीक मांगना हराम है क्यूँकि लड़की की शादी में इस्लाम ने कोई ख़र्चा लाज़िम व ज़रूरी क़रार नहीं दिया। और बेज़रूरत भीक हराम है और ऐसों को देना भी मुनासिब नहीं। हाँ बे मांगे मदद करने में हरज नहीं।

बढ़ते ख़र्चे और घटते धन्धे

आज एक तरफ़ तो हर आदमी कारोबारी एतबार से परेशान नज़र आ रहा है। जिस से पूछो वह कहता है धन्धा ख़राब चल रहा है। बे रोज़गारी का दौर दौरा है। कारोबार चौपट पड़े हुए हैं, आधे से भी ज़्यादा लोग बीमार हैं। दूसरी तरफ़ ब्याह शादी के इख़राजात आसमान छू रहे हैं। उसके अलावा नए-नए शौक़ फैशन की रंगीनियों बे ज़रूरत बे वजह कपड़े पर कपड़े बनाने की बीमारी मकानों को ज़रूरत से ज़्यादा सजाना संवारना हर चीज़ में नए नए माडलों और नमूनों की तलाश लोगों का मिज़ाज बन चुका है। अगर यह फ़ालतू ग़ैर ज़रूरी इख़राजात का शौक़ और धन्धे कारोबारों की ख़राबी का यह दौर चलता रहा तो आने वाले वक़्त में दिल और दिमाग़ के मरीज़ों की तादाद बहुत ज़्यादा होगी। और अब भी काफ़ी वह लोग हैं जिनके दिमाग़ों में टैंशन रहता है। उन्हें नींद नहीं आती। गोलियाँ खाकर सोते हैं या नशा करके सुकून हासिल करने की कोशिश करते हैं इनमें ज़्यादातर वही लोग हैं जो आमदनी से ज़्यादा ख़र्चे करने के आदी हो गए हैं। निकम्मे काहिल और आराम तलब या नाकारा हैं लेकिन अरमान बहुत हैं, ख़ुशी कोई न रह जाए

Scanned by CamScanner

हसरतें सब मिट जायें या फिर ग़रीब व नादार मुफ़लिस और फक्कड़ हैं जो खाने पहनने और रहने सहने में अमीरों की शरीकी करते हैं। भाईयो दुनिया में कभी भी किसी के सभी अरमान पूरे नहीं होते न सब हसरतें पूरी होती हैं। जहाँ सब हसरतें पूरी होंगी और सब अरमान निकलेंगे वह जगह जन्नत हैं वह अल्लाह ने उनके लिए बनाई है जिनसे वह राज़ी है।

हल सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम में

आज ब्याह शादी के बढ़ते हुए इख़राजात को देखकर एक मैं ही नहीं अकसर लोग परेशान हैं। और जगह जगह इसके चर्चे हैं। बातें होती हैं और लोग अफ़सोस भी करते हैं। गवर्नमेंट भी इस को रोकने की तदबीरें कर रही है और क़ानून बना रही है लेकिन मुसलसल नाकामी ही नाकामी है और इख़राजात दिन बदिन बजाए घटने के बढ़ते ही जा रहे हैं। इसकी वजह यह है कि लोग इस्लाम को नहीं अपना रहे हैं और मेरा दावा है कि जब तक इलामी उसूल न अपनाए जायें हरगिज़ दुनिया में अमन व सुकून क़ाइम नही हो सकता। इसलाम इस बारे में जो तरकीब बताता है वह ये है :

1. लड़कियों को जाएदाद से हिस्सा।
2. हैसियत वाले मर्दों में एक से ज़्यादा निकाहों का रिवाज।

इन दोनों फ़ार्मूलों पर अगर अमल होने लगे तो यक़ीनन जहेज़ की मांगें और ब्याह शादी के इख़राजात पर कन्ट्रोल लाज़मी नतीजा है।

क्यूँकि शौहर को जब मालूम होगा कि मेरी बीवी को बाप के तर्के से उसके मरने के बाद ज़मीन व जाएदाद नक़दी वग़ैरह से हिस्सा मिलेगा और वह ज़रूरत के वक़्त मेरे बच्चों के या मेरे ही काम में आएगा तो उसकी नज़र शादी के वक़्त जहेज़ वग़ैरह पर बिल्कुल नहीं होगी या कम होगी लेकिन ये तभी हो सकता है कि जब यह हिस्से देने का रिवाज हो जाए और रिवाज डालने से पड़ते हैं हर एक

अपनी अपनी ज़िम्मेदारी अदा करे इधर लड़के और उनके घर वाले सादा निकाह करने की हिम्मत करें और उधर भाई लोग बाप के हिस्से से बहनों को हिस्सा देना राइज करें और यह भी नहीं सोचना चाहिए कि वह ऐसा करें तब हम ऐसा करें बल्कि सोच यह होना चाहिए कि कोई करे यान करे हमें तो वह करना है जो अल्लाह का हुक्म है हमें अपनी क़ब्र में सोना है उसको अपनी क़ब्र में। और ख़ूब जान लो कि दुनिया में शोहरत व इज़्ज़त और आख़िरत में सवाब व जन्नत उन्हीं के लिए है जो ग़लत रस्म व रिवाज के रंग में ख़ुद को रंगने के बजाए इसके ख़िलाफ़ चलने और करनेकी हिम्मत करते हैं। माहौल के रंग में रंग जाना तो आसन है ग़लत माहौल से टकराना मर्दों बहादुरों और हिम्मत वालों का काम है।

नेकी इन्सान के साथ बदले, सिले और जज़ा की उम्मीद अल्लाह से

किसी ग़रीब की बेटी से निकाह करना हो या और कोई नेकी उसके बदले और जज़ा की उम्मीद कभी किसी इन्सान से नहीं रखना चाहिए। इन्सान उमूमन बेवफ़ाई करता है और दुनिया नाम ही बेवफ़ाई का है जो लोग इन्सान के साथ नेकी करते और इन्सान से उसके बदले की उम्मीद रखते हैं वह कम समझ हैं और नेकी करने वाले हो ही नहीं सकते वह यही कहते और गिले शिकवे करते रहेंगे कि मैंने फ़लाँ के साथ ऐसा किया तो उसने यह धोका दिया और मुझको यह नुक़सान पहुँचाया और धोके खाने और नुक़सान उठाने के बाद नेकी करना छोड़ देंगे और जो अल्लाह से उम्मीद रखते हैं तो जान रखो कि अल्लाह धोका देने से पाक है। यहाँ

Scanned by CamScanner

नहीं तो आख़िरत में सिला ज़रूर मिलेगा। और मैंने तजर्बा किया है कि अगर आप नेकी करने के आदी हैं तो वक़्त पर वह लोग तो कम ही काम आते हैं जिनके साथ आपने नेकी की है लेकिन ख़ुदाए तआ़ला और बन्दे पैदा फ़रमा देता है। लिहाज़ा माँ हो या बाप, भाई या औलाद या दोस्त, पड़ोसी हो या रिश्तेदार जिस इन्सान के साथ जो नेकी करो सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए करो और उसी से बदले, सिले और जज़ा की उम्मीद रखो।

मर्द के लिए एक से ज़्यादा निकाहों का रिवाज

मर्दों के लिए एक से ज़्यादा निकाह करने की तजवीज़ भी इस्लामी मिज़ाज है। जो लोग बिल्कुल ही नादार मुफ़लिस और ऐसे ग़रीब या बीमार व कमज़ोर हों कि एक औरत का ख़र्चा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते उनको तो इस्लाम एक निकाह की भी इजाज़त नहीं देता बल्कि उसके लिए हुक्म है कि अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश को रोकने के लिए रोज़े रखें यानी भूक से मिटाए और जो लोग सरमाएदार हैं अच्छी आमदनियों वाले हैं उनके पास माल व दौलत की फ़रावानी है, रहने सहने के लिए मकानात हैं वह अपनी हैसियत के एतबार से चार तक बीवियाँ रख सकते हैं। मैंने देखा कि बाज़ निकम्मे नाकारे और फक्कड़ ग़रीब नादारों के घर में एक औरत के लिए रहने सहने और खाने का ठिकाना और गुज़ारा नहीं है और वह ज़िन्दगी भर दुखी रहती है और बाज़ दौलतमन्द तन्दरुस्त सरमायादारों अमीरों के घर में कई कई औरतें निहायत चैन व सुकून राहत व आराम से ज़िन्दगी गुज़ारती हैं और ख़ुश रहती हैं। तो अगर यह दौलतमन्द एक से ज़्यादा चार तक बीवियाँ रखें और बेटियों वाले उनसे अपनी बेटियों के निकाह करने में शर्म महसूस न करें तो

इस तरह ग़ैर शदीशुदा लड़कियों की तादाद में कमी हो जाएगी और फिर बेटियों वाले रिश्ते तलाश नहीं करेंगे बल्कि बेटों वाले तलाश करेंगे बल्कि ख़ुशामद करेंगे और बजाए जहेज़ मांगने के महर देंगे और यही इसलाम है गोया कि इस तरह लड़कियों की इज़्ज़त और वक़अत घटेगी नहीं बल्कि और बढ़ेगी। आज अमीरों का तो यह माहौल है कि यह बीवी तो एक ही रखेंगे लेकिन दौलत के सहारे अय्याशियाँ और ज़िनाकारियाँ करने को कोठों होटलों और अय्याशी के अड्डों के चक्कर लगायेंगे बल्कि अब तो ऐसे लोग भी सुनने में आ रहे हैं जो ज़िन्दगी भर शादी नहीं करते अय्याशी में ही ज़िन्दगी काट देते हैं। दूसरी तरफ़ ग़रीबों का यह हाल है कि भीक मांग मांग कर जहेज़ इकट्ठा करेगा लेकिन उससे कह दो कि फ़लाँ बड़ा आदमी दूसरी शादी करना चाहता है लड़की को महर दिला कर उससे सादा निकाह कर दो तो बुरा मान जएगा। यह सब इस्लाम से दूरी का नतीजा है। शराबी जुआरी नशीले गिरस्ती का सामान बेच बेच कर खाने वाले के घर में ठूंस देगा लेकिन दूसरी बीवी बना कर नहीं भेजेगा यह नादानी व नावाक़िफ़ी का नतीजा है।

और यह हम पहले लिख चुके हैं कि इस्लाम में एक से ज़्यादा निकाह की इजाज़त सिर्फ़ उस मर्द को है जो उनका ख़र्च बर्दाश्त कर सके और इसलाम की इजाज़त का जो लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं वह बतायें कि उन अमीरों, रईसज़ादों, करोड़पतियों, पूंजीवादियों, मिन्स्टरों, गवर्नरों, अव्वल दर्जे के लोगों में वह कितने हैं जो सिर्फ़ एक बीवी के साथ ज़िन्दगी काट देते हैं और कोठों, रंडीख़ानों, होटलों और क्लबों में नहीं जाते हैं तो फ़र्क़ यही है कि एक औरत पर सब्र तुम भी नहीं करते लेकिन तुम होटलों की कालगर्ल बना कर उसकी ज़िन्दगी ख़राब करते हो और इस्लाम बीवी बना कर इज़्ज़त देता है और समाज में हैसियत और मक़ाम। और चन्द बीवियाँ रखने वालों को इस्लाम में यह भी ताकीद की

Scanned by CamScanner

गई है कि वह उन सब के साथ रहन सहन खाने ख़र्चे वग़ैरह में बराबरी का बर्ताव करें जो लोग नई नई बीवियो के दीवाने होकर पुरानी या कम ख़ूबसूरत औरतों को बिल्कुल नज़रअन्दाज़ कर देते हैं उन्हें ज़लील व ख़्वार रखते उनकी तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखते उनके लिए अल्लाह के रसूल ने आख़िरत में अज़ाब की सख़्त वईद और सज़ा सुनाई है और आप ﷺ की भी कई बीवियाँ थीं सब के साथ बराबरी रखते। बारियाँ मुक़र्रर थी एक रात एक के साथ गुज़ारते सफ़र में तशरीफ़ लेजाते तो क़ुरा डाला जाता जिसका नाम निकल आता उसकी को लेकर जाते।

एक अहम और ख़ास इस्लामी तजवीज़

आज औरतों लड़कियों के अग़वा उनके साथ बलात्कार के वाक़ियात व मुक़दमात में इतना इज़ाफ़ा हो रहा है कि दुनिया परेशान है अय्याशियों के अड्डों की तादाद बढ़ती जा रही है। पुलिस छापे लगाते लगाते परेशान है देखते ही देखते लाखों लड़कियाँ कालगर्ल और रंडी पेशा बन गईं। घरों मुहल्लों और बस्तियों में ज़िनाकारी कुंआरे लड़के लड़कियों के आपस में नाजाइज़ तअल्लुक़ात का यह आलम है कि सिर्फ़ एक शहर देहली में अख़बारी रिपोर्ट और सर्वे के मुताबिक़ लेडी डाक्टरों के ज़रिए चार हज़ार से ज़्यादा नाजाइज़ हमल एक दिन में गिराए जाते हैं। मैं कहता हूँ कि इस्लामी नज़रिए के मुताबिक़ बे मजबूरी के मर्दों औरतों ख़ासकर जवान लड़के और लड़कियों का ग़ैर शादीशुदा रहना मायूब, मम्नूअ़ और नापसन्दीदा है। इस इस्लामी मिज़ाज पर अमल करते हुए क़ानूनी तौर पर मजबूर करके तमाम शादी के लाइक़ और जवान लड़कों और लड़कियों की शादी करा

दी जायें और तन्दरुस्त और सही व सालिम बालिग़ मर्दों औरतों के लिए बग़ैर किसी ख़ास मजबूरी के बेनिकाह रहना जुर्म क़रार दे दिया जाए और निकाह एकदम सादा तौर पर हों ताकि क़ानून पर अमल करने और सज़ा से बचने के लिए किसी को दिक़्क़त न आए और जब क़ानूनी सज़ा से बचने की फ़िक्र होगी तो ख़ुद ब ख़ुद जल्दी जल्दी सादगी से निकाह किए जायेंगे। अगर यह सब हो जाए तो मेरा दावा है कि ज़िनाकारी बदकारी औरतों लड़कियों के अग़वा और बलात्कार के मुक़दमात वाक़ियात या तो एक दम ख़त्म हो जायेंगे या ना होने के बराबर रह जायेंगे।

मर्दों औरतों लड़कों लड़कियों का बेनिकाह रहना ही हर ज़िनाकारी अस्मतदारी अय्याशी और बदकारी की ख़ास वजह है। आज सैक्स फ़्री करने यानी ज़िनाकारी को क़ानूनन जाइज़ क़रार देने की तजवीज़ पार्लियामेन्ट में रखी जा रही हैं लेकिन क़ानूनी तौर से मजबूर करके आज़ाद आवारा और बेनिकाह मर्दों औरतों लड़के लड़कियों के निकाह क्यूँ नहीं किए जा रहे हैं और होटलों और अय्याशी के अड्डों में जाकर ज़िना करने वालों को उन्हीं रंडी पेशा औरतों और कालगर्ल्स के साथ निकाह करने का क़ानून क्यूँ नहीं पास कर दिया जाता कि जो जिसके साथ ज़िना में पकड़ा जाए उसको उस औरत के साथ निकाह करना ज़रूरी है और जो लड़के लड़कियाँ ज़िनाकरी करते और रंगरलियाँ मनाते पकड़े जायें उनके साथ ज़बरदस्ती निकाह क्यूँ नहीं करा दिए जाते। इनामात के लालच देकर भी यह काम किए जा सकते हैं कि सादा निकाह करने वाले लड़के लड़कियों को हुकूमत की तरफ़ से इतना इतना इनाम दिया जाएगा और जो सरकारी मुलाज़िम किसी आज़ाद लावारिस औरत से निकाह करेगा उसको बीवी बना कर इज़्ज़त से रखेगा उसके ओहदे में

Scanned by CamScanner

तरक़्क़ी कर दी जाएगी वग़ैरह वग़ैरह और सरमायादार लोग चार तक निकाह कर सकते हैं।

गोया कि बात यही है कि हर मुश्किल का हल और समाज की हर समस्या का समाधान और दुनिया की हर परेशानी और हर बुराई दुख दर्द और मुसीबत ख़्वाह वह इनफ़िरादी हो या इज्तिमाई सब से नजात व छुटकारा पाने का रास्ता सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम है और इस्लाम से दूरी का नतीजा है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी आंखें खोलने को एड्स जैसी ख़तरनाक बीमारी को अ़ज़ाब बना कर भेज दिया है ताकि तुम आंखें खोलो होश में आओ वर्ना याद रखो यह तो दुनिया का अ़ज़ाब है।

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْ يَعْلَمُوْن

"और आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत बड़ा है काश तुम जानते।"

और काइनात की सबसे बड़ी सच्चाई है।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه

"अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।"

तत्हीर अहमद रज़वी
क़स्बा धौंरा ज़िला बरेली शरीफ़
23 ज़िलहिज्जा मुबारक हिजरी 1426
मुत बिक़ 24 जनवरी 2006

ज़रूरी नोट

क़ुर्आने करीम अल्लाह का कलाम है। वह अरबी ज़बान में नाज़िल हुआ उसको अरबी के अलावा किसी ज़बान में नहीं पढ़ना चाहिए। उसका तर्जमा (अनुवाद) किसी भी ज़बान में पढ़ सकते हैं लेकिन ख़ास क़ुर्आन को अरबी के अलावा किसी भी ज़बान में पढ़ना या लिखना या छापना बहुत बुरी बात है।

Scanned by CamScanner

हमारी दिगर मतबुआत

Islami Kutub khana
Raza Market, Dhounra, Distt. Bareilly, U.P.-243204
Ph. : 0581-2623043, Mob. : 9319295813

Scanned by CamScanner